दर्पण

वार्षिक हिंदी पत्रिका

वर्ष 2023 * अंक-5

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-2, जयपुर

(संयोजक : उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय, जयपुर)

दर्पण

✻ सम्पादक मण्डल ✻

मुख्य संरक्षक

श्री विजय शर्मा

महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे
एवं अध्यक्ष नराकास कार्यालय-2, जयपुर

संरक्षक

श्री गौतम अरोरा

अपर महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे
एवं उपाध्यक्ष नराकास कार्यालय-2, जयपुर

परामर्शदाता

श्री प्रणय प्रभाकर

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक

प्रधान सम्पादक

श्रीमती ऋतु शुक्ला

अपर महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो
एवं पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर

डॉ. सुभाष चन्द्र

निदेशक

कदन्न विकास निदेशालय

कैप्टन शशि किरण

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं मुख्य जन संपर्क अधिकारी

श्री राम सुशील सिंह

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
एवं सचिव नराकास कार्यालय-2, जयपुर

श्री अरविंद कुमार शर्मा

टीजीटी (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय नं.-3, जयपुर

विजय शर्मा
महाप्रबंधक
Vijay Sharma
General Manager
एवं अध्यक्ष
नराकास (कार्यालय-2)

उत्तर पश्चिम रेलवे
प्रधान कार्यालय, जवाहर सर्किल के पास,
मालवीय नगर, जयपुर-302017
NORTH WESTERN RAILWAY
Headquarter Office, Near Jawahar Circle,
Malviya Nagar, JAIPUR-302017
Ph. 0141-2725800 (Off.)
0141-2725816 (Fax)

अध्यक्ष की कलम से...

यह बड़े हर्ष का विषय है कि नराकास (कार्यालय-2) द्वारा राजभाषा के प्रयोग-प्रसार बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किया जा रहा है एवं सभी सदस्य कार्यालयों का सकारात्मक योगदान रहता है।

मेरी अपेक्षा है कि जयपुर 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहां के कार्यालयों में सरकारी कामकाज के सभी मदों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित किया जाए और जनता की आम बोलचाल की भाषा हिंदी में अधिकांश सेवाएं प्रदान करें।

इस समिति द्वारा वार्षिक हिंदी पत्रिका 'दर्पण' का पाँचवाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। मैं इसके लिए सभी सदस्य कार्यालयों के साथ-साथ विशेष रूप से इसके संपादन कार्य में लगे कार्मिकों/अधिकारियों को बधाई देता हूँ और सफलता की कामना करता हूँ।

जय हिंद !

(विजय शर्मा)
महाप्रबंधक

संपादकीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2) की ओर से हिंदी वार्षिक पत्रिका 'दर्पण' का पाँचवाँ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। इस अंक को पहले से बेहतर बनाने का गंभीरतापूर्वक प्रयास किया गया था, जिसका परिणाम इस अंक में दृष्टिगोचर होगा।

इस अंक में शामिल की गई रचनाएं अपनी विषयवस्तु और प्रस्तुतीकरण में आकर्षक और गुणवत्तापूर्ण हैं। जैसाकि आप जानते हैं कि यह वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मीलेट्स वर्ष के रूप में घोषित किया गया है। प्रधानमंत्री स्वयं विभिन्न माध्यमों से पारंपरिक मोटे अनाज और उनसे बनी खाद्य सामग्रियों को प्रोत्साहन दे रहे हैं। इस विषय से सम्बन्धित एक रचना 'पोषक अनाज' इस अंक में शामिल की गई है। केंद्र सरकार पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक है और भारत इस संदर्भ में सारे विश्व का नेतृत्व कर रहा है। हाल में भारत सरकार द्वारा जल और ऊर्जा संरक्षण को एक जीवनशैली के रूप में अंगीकार करने के लिए प्रेरित करने हेतु मिशन लाइफ शुरू किया गया है। इस अंक में इस विषय से सम्बन्धित एक रचना 'पृथ्वी की पीड़ा और उसका उपहार' सम्मिलित की गई है।

इसके अलावा तप, भारतीय अर्थव्यवस्था में सिपेट का योगदान, सकारात्मक उर्जा एक सागर है, फाइनल डिलेवरी, लक्ष्मी की आत्मकथा और लोग क्या कहेंगे जैसी रचनाएं विभिन्न विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करती हैं। हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, ऐसे में आजादी के संघर्ष में रेल के योगदान को रेखांकित करती रचना 'आजादी का अमृत महोत्सव - रेल की भूमिका' अत्यंत जानकारीपूर्ण और प्रेरक है। पुष्कर मेले में कर्तव्य पथ का अनुभव जैसी रचनाएँ आपको तकनीक से सरकार की योजनाओं को कैसे रुचिकर तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं उसकी झलक देंगे।

इसी प्रकार कोरोना से युद्ध व पुनर्निर्माण तक, मम्मी मैं शिक्षक बन जाऊं, उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो, शिक्षक हूँ मैं, तेरी परवाह करता हूँ, अंधकार से जीवन, दृष्टिदोष, बचपन की यादें, उदासी, ये मेरी रेल की कहानी, एक पिता की कलम से, जिंदगी, क्षणिक आदि कविताएं सारगर्भित और भावपूर्ण हैं।

आशा है, यह अंक आपको पसंद आएगा। अपनी प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत कराएं।

ऋतु शुक्ला
अपर महानिदेशक
केन्द्रीय संचार ब्यूरो एवं पत्र सूचना कार्यालय
जयपुर

दर्पण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-2, जयपुर

दर्पण

संयोजक कार्यालय : राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, उत्तर-पश्चिम रेलवे, जयपुर

अंक : 5, वर्ष - 2023

मुख्य संरक्षक
विजय शर्मा
महाप्रबंधक
***
संरक्षक
गौतम अरोरा
अपर महाप्रबंधक
***
परामर्शदाता
प्रणय प्रभाकर
मुख्य राजभाषा अधिकारी
***
प्रधान सम्पादक
ऋतु शुक्ला
अपर महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो एवं
पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर
***
सम्पादक
राम सुशील सिंह
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
***
संपादक मंडल
बृजमोहन मीना, अंजु शर्मा
छाजू राम, एन.डी. पुरोहित
वरिष्ठ अनुवादक
***
संपर्क सूत्र
राजभाषा विभाग, उत्तर पश्चिम रेलवे
प्रधान कार्यालय, जयपुर
मो. नं. 9001195029/46

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	आजादी का अमृत महोत्सव रेल की भूमिका	कैप्टन शशिकिरण	4
2.	आत्मनिर्भर स्वदेशी समाज एवं हिंदी	बिरेंद्र कुमार पाण्डेय	6
3.	पर्यावरण सरंक्षण को संवर्धित करती राजस्थान की खेती	वीरेन्द्र कुमार परिहार	8
4.	पोषक अनाज : पोषण सुरक्षा और स्वस्थ जीवन का आधार	डॉ. ओमप्रकाश खेदड	10
5.	पृथ्वी की पीड़ा और उसका उपहार	मीनाक्षी हल्दानियाँ	12
6.	तपः	साभार जीवन वेद से	14
7.	भारतीय अर्थव्यवस्था में सिपेट का योगदान	आराधना शुक्ला	16
8.	लक्ष्मी की आत्म कथा	कामेश्वर पाण्डेय	18
9.	सकारात्मक उर्जा एक सागर है	पूर्णा नन्दा महरडा	20
10.	फाइनल डिलेवरी	कपिल अरोड़ा	29
11.	लोग क्या कहेंगे (WHAT WILL PEOPLE COMMENT)	सीए. जयन्त गुप्ता	35
12.	क्षणिक	मेघराज मीना	36
13.	पुष्कर मेले में केंद्रीय संचार ब्यूरो की अत्याधुनिक मल्टीमीडिया प्रदर्शनी : एक अभिनव पहल	पराग मांदले	37
14.	घृणा : कोरोना में पलायन	अभिनन्दन	38
15.	कोरोना से युद्ध व पुनर्निर्माण तक	सतीश देपाल	39
16.	मम्मी, मैं शिक्षक बन जाऊँ	डॉ. अरविन्द शर्मा	40
17.	उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो	श्रीमती सरिता जानू	40
18.	शिक्षक हूँ मैं, तेरी परवाह करता हूँ...	सुनील दत्त शर्मा	41
19.	अंधकार से जीवन ?	अजय सिंह तोमर	41
20.	दृष्टि-दोष	तुंग नाथ त्रिपाठी	42
21.	बचपन की यादें	योगिता शर्मा	43
22.	ये मेरी रेल की कहानी है	चन्द्र प्रकाश प्रजापत	45
23.	उदासी	डॉ. राहुल मिश्र	46
24.	एक पिता के कलम से	देवानन्द पन्निका	47

इस प्रत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं, कविता आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों व रचनाकारों के अपने हैं जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है। - संपादक मंडल

आजादी का अमृत महोत्सव रेल की भूमिका

कैप्टन शशिकिरण

“है आज उचित उन वीरों का करना सुमिरन
जिनके आँसू, जिनके लहू, जिनके श्रमकण
से हमें मिला है दुनिया में ऐसा अवसर
हम तान सकें सीना, ऊँची रखे गर्दन
आज़ाद कंठ से आज़ादी का करें गान
आज़ादी का दिन मना रहा हिन्दोस्तान”

आदरणीय श्री हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित अमर कविता ‘आजादी की पहली वर्षगांठ’ की ये पंक्तियां स्वतंत्रता के महत्व और उसके अमर संघर्ष को रेखांकित करती है। आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के पावन अवसर को भारत सरकार ‘आजादी के अमृत महोत्सव’ के रूप में मना रही है। दिनांक 12 मार्च 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह की शुरुआत की थी। वर्ष 2020-21 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री मोदी ने साबरमती आश्रम से अमृत महोत्सव की शुरुआत पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर की।

आजादी का अमृत महोत्सव प्रगतिशील भारत के 75 वर्ष पूरे होने और यहां के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को याद करने और जश्न मनाने के लिए भारत सरकार की ओर से की जाने वाली पहल है। आजादी का अमृत महोत्सव भारत की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। आजाद भारत के निर्माताओं ने जिस सूझबूझ, कर्मठता, साहस के साथ परिस्थितियों से लोहा लिया, वह इतिहास का क्रांतिकारी पृष्ठ है।

स्वतंत्रता एवं सहअस्तित्व वाली भारत की विदेश नीति इतनी स्पष्ट है कि आज दुनिया में भारत अपना परचम फहरा रहा है। अनेक राष्ट्र नायक राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो

रहे हैं। भारतीय रेलवे द्वारा 18 जुलाई से 23 जुलाई के सप्ताह में सप्ताह भर चलने वाले समारोहों के दौरान हुए कार्यक्रमों में स्टेशन भवनों पर रोशनी और सजावट, स्टेशनों पर प्रदर्शनियां, फोटो गैलरी और डिस्प्ले लगाए गए थे। स्टेशन के प्लेटफार्म पर वीडियो क्लिप दिखाए गए और देशभक्ति के गीत बजाए गए। स्टेशन के महत्व को उजागर करने के लिए स्टेशन से संबंधित स्वतंत्रता संग्राम के सार वाले नुक्कड नाटक और प्रहसन का मंचन किया गया। प्रतिष्ठित सप्ताह के दौरान स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित कुछ ट्रेनों को सुरुचिपूर्ण ढंग से फूलों से सजाया गया और स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा झंडी दिखाकर रवाना किया गया था।

रेलवे में आजादी के अमृत महोत्सव मनाने का लक्ष्य

है कि लोग आजादी की लडाई में भारतीय रेल की भूमिका को जाने । माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अनुसार देश में अनेक ऐसे रेलवे स्टेशन है, जो स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास से जुड़े हैं । इन रेलवे स्टेशनों के बारे में आम जन जानकर हैरान होंगे। इस क्रम में प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में झारखंड के नेताजी सुभाष चंद्र बोस जंक्शन गोमो, लखनऊ के पास स्थित काकोरी रेलवे स्टेशन, तमिलनाडु के तूत्तुक्कुडि जिले के वांची मणियाच्ची जंक्शन का उल्लेख किया और इनके ऐतिहासिक महत्व के बारे में बताया। इस क्रम में देशभर के 24 राज्यों में फैले ऐसे 75 रेलवे स्टेशन की पहचान की गई थी। इन 75 स्टेशनों को बहुत ही खूबसूरती से सजाया गया एवं इनमें कई तरह के कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

वर्तमान में भारत गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान के तहत आगे बढ रहा है । यह मास्टर प्लान देश के विकास को अभूतपूर्व गति दे रहा है। देश के संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित किया जा रहा है । यह प्लान सामान्य भारतीय के लिए 'ईज ऑफ लिविंग' को सुनिश्चित कर रहा है। रेलवे में कई नये प्रोजेक्ट इस प्लान के तहत तेज गति से आगे बढ रहे हैं। करीब दो सौ से अधिक रेलवे स्टेशन का कायाकल्प किया जाएगा और उन्हें विश्वस्तरीय मानकों के अनुरूप परिकल्पित किया जाएगा। भारतीय रेल के सामर्थ्य का बड़े स्तर पर विस्तार किया जा रहा है।

पहली बार सामान्य तीर्थाटन को दिव्य अनुभव किया जा रहा हैं। रामायण सर्किट ट्रेन ऐसा ही एक प्रयास है। रामायण एक्सप्रेस के माध्यम से रामायण काल के स्थलों का भ्रमण कराया जा रहा है। इसी तरह की और भी ट्रेनें चलाई जायेंगी। आजादी के अमृत महोत्सव में भारतीय रेलवे आने वाले दो साल में पिचहत्तर नई वन्दे भारत ट्रेनें चलाने जा रहा है। देश की आजादी के अमृत महोत्सव के 75 सप्ताह में 75 वंदे भारत ट्रेनें चलेंगी, जो देश के कोने-कोने को आपस में जोड़ेंगी। रेल मंत्रालय में इस योजना पर अमल को लेकर लगातार बैठकों का सिलसिला चल रहा है। रेल मंत्रालय ने देश के सभी व्यस्त रूटों पर वर्ष 2024 तक सेमी हाईस्पीड वंदे भारत ट्रेनों के संचालन की योजना तैयार की है। देश में पहली वंदे भारत ट्रेन, नई दिल्ली से बनारस के बीच फरवरी 2019 को चलाई गई थी एवं वर्तमान में 07 वंदे भारत ट्रेन संचालित की जा रही है।

इसी कड़ी में उत्तर पश्चिम रेलवे पर भी इस कार्यक्रम के तहत अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर पश्चिम रेलवे पर टोक्यो ओलम्पिक में भारतीय खिलाडियों का मनोबल बढाने के लिए चीयर 4 इंडिया रन का आयोजन किया गया तथा टोक्यों ओलम्पिक के खेलों से संबंधित क्विज, स्लोगन लेखन तथा वीडियो मेकिंग सहित प्रतियोगिताओं में mygov.in वेबसाइट के माध्यम से भागीदारी की गई । इसके साथ ही आजादी दिलवाने में अहम योगदान देने वाले महान स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से देशवासियों को प्रेरणा देने के उद्देश्य पर उन्हें ट्रेनों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था।

आजादी का अमृत महोत्सव पर उपरे के जयपुर समेत चारों मंडल के प्रमुख स्टेशनों पर खादी की प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें यात्रियों ने खरीददारी की । इस महोत्सव को और खास बनाने के लिए रेलवे के अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिवार ने राष्ट्रगान गाकर उसकी रिकार्डिंग www.rashtragaan.in पर अपलोड की ।

आजादी का दर्शन कहता है कि जो आदमी आत्मविश्वास एवं अभय से जुड़ता है वह अकेले ही अनुठे कीर्तिमान स्थापित करने का साहस करता है। वर्तमान नेतृत्व का ध्येय समस्याओं के मूल को पकडने के लिए जद्दोजहद करना और देश के युवा को इस कार्य में दिशा देना रहा है। इससे देश न केवल सशक्त बनेगा बल्कि देश अपने पुराने गौरव जब भारत विश्व गुरु था, को भी प्राप्त करने के सार्थक प्रयास की तरफ कदम बढायेगा।

मुख्य जन संपर्क अधिकारी (उपरे)

आत्मनिर्भर स्वदेशी समाज एवं हिंदी

बिरेंद्र कुमार पाण्डेय

इस वर्ष को देश अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में ''आजादी का अमृत महोत्सव'' के रूप में मना रहा है। इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण हो जाता हैं कि पूरे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को ''स्व'' के दृष्टि से समझने का प्रयास किया जाए। स्वराज स्वदेशी और स्वभाषा के लिए श्री अरविंद, महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, महामना मदन मोहन मालवीय ने एक विस्तृत सामाजिक दर्शन इस राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत किया है, जिसमें राष्ट्रीय स्वाभिमान के साथ सांस्कृतिक विरासत भी है।

गुरुदेव रवींद्र नाथ ठाकुर द्वारा स्थापित ''स्वदेशी समाज'' निजत्व पर आधारित ''स्व'' के लिए संघर्ष करता जन आंदोलन था। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य भारतीय एकत्व जीवन दर्शन की पुनः स्थापना हेतु 'स्वात्म-बोध' जागरण कर, भाषा, शिक्षा, साहित्य, समाज, संस्कृति में - अर्थात जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वदेशी व्यवस्थाओं का विकल्प खड़ा करना था। गुरुदेव स्वदेशी विचार को भारत की आत्मा कहते थे।

साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक स्वदेशी समाज का हिंदी अनुवाद पढ़ने के बाद भारत के बारे में गुरुदेव के विचार कितने मूलभूत और मौलिक थे यह देख कर मन आनंदित हो जाता है। यहां गुरुदेव की भारत की राष्ट्रीयता और समाज केंद्रित स्वावलंबी, आत्मनिर्भर, स्वदेशी व्यवस्था का विचार विचारणीय है। गुरुदेव कहते हैं ''वह समाज जो अपनी आवश्यकताओं के लिए राज्य पर कम से कम अवलंबित हो वह स्वदेशी समाज है ।'' वास्तव में 'स्वदेशी' मंत्र केवल किसी सामाजिक, सामयिक आंदोलन से संबंधित नहीं है, वरन यह मानव जीवन को आडंबरशून्य 'निज भाषा, निज उन्नति' के भाव पर आधारित स्वावलंबी होने की प्रक्रिया है ।

महात्मा गांधी ने इसी सिद्धांत को समझकर लोगों से भाषा के रूप में हिंदी और वस्त्र के रूप में खद्दर व्यवहार में लेने को कहा था। हम विचार करें कि महात्मा गांधी ने जब यह कहा कि हिंदी भारत राष्ट्र की एक प्रतिनिधि भाषा बने, तो इसके पीछे पूज्य बापू का भाषावाद या कोई क्षेत्रवाद नहीं था । हिंदी के समर्थन के पीछे उनका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर आत्मबोध युक्त भारत की स्थापना करना था । वे मानते थे कि अंग्रेजी से राष्ट्र चेतना को जागृत नहीं किया जा सकता ।

लोकमान्य तिलक ने भी स्वदेशी की महिमा को बहुत पहले ही समझ लिया था और इसलिए उन्होंने भी पूना में स्वदेशी आंदोलन आरंभ किया। उनके लिए स्वदेशी का प्रचार, आंदोलन का एक स्वरूप मात्र नहीं था अपितु राष्ट्र की आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान के प्रतीक था। हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने की बात सर्वप्रथम तिलक ने ही की थी। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि हिंदी को अपनाकर भारत में एक समान संपर्क भाषा की आवश्यकता की व्यावहारिक पूर्ति की जा सकती है।

स्वतंत्रता संग्राम के कालखंड में हमारे उन पुरखों ने हिंदी को आगे बढ़ाया जो स्वयं अहिंदी भाषी प्रदेशों से आते थे। जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी ऐसे बाल गंगाधर तिलक, केशव राव पेठे, वेणी माधव भट्टाचार्य, शारदा प्रसाद सान्याल, रामबहादुर प्रमाददास मित्र, नीलकमल मित्र आदि ऐसे बहुत नाम है।

देश स्वतंत्र होने के पश्चात संविधान रचयिताओं ने 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को

केंद्र सरकार की राजकाज की भाषा के रूप में अंगीकार किया जिसके प्रबल समर्थक थे महात्मा गांधी, के. एम. मुंशी लोकमान तिलक, एम. ए. आयंगार। राजभाषा हिंदी संपर्क भाषा की भूमिका निभाते हुए एक विशाल जनसमूह को आपस में जोड़ती है। हिंदी ने अपनी जन स्वीकार्यता एवं लोकप्रियता के कारण ही भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा का दर्जा प्राप्त किया है। भाषा से लोक संस्कृति का गहरा जुड़ाव होता है। भारतीय संस्कृति और लोक को उसी की भाषा के बिना नहीं समझा व आत्मसात किया जा सकता है।

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के सेवानिवृत वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विजय भार्गव के अनुसार देश को आत्मनिर्भर, सम्पन्न बनाने के लिए वैज्ञानिक शोध एवं देश के अनुकूल प्रौद्योगिकी के विकास पर निर्भर करता है और यह तभी संभव है, जब विज्ञान और तकनीकी शिक्षा का माध्यम स्वभाषा हो। वैज्ञानिक शोध को दो भाग में बांटा जा सकता है- मौलिक शोध तथा अनुप्रायोगिक शोध। मौलिक शोध प्राकृतिक/ब्रह्माण्डिय नियमों, सिद्धांतो पर आधारित होता है और अनुप्रायोगिक शोध देश विशेष के संसाधनों पर आधारित होता है। मौलिक शोध सभी देशों के लिए समान होता है जैसे गुरुत्वाकर्षण नियम इत्यादि। इन नियमों का अनुप्रयोग करके जमीन से जुड़ा शोध किया जा सकता है। जैसे संगणक (कम्प्यूटर) के सिद्धांतों का आविष्कार यह मौलिक शोध है उसमें सॉफ्टवेयर का विकास अपने देश की आवश्यकता एवं अपनी भाषा में किया जाना यह अनुप्रायोगिक शोध है। दोनों प्रकार के शोध-अनुसंधान में मौलिक चिन्तन की आवश्यकता होती है और मौलिक चिन्तन अपनी भाषा में ही हो सकता है।

स्वावलंबी, आत्मनिर्भर तथा अपनी भाषा में शिक्षा विषय को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने उच्च एवं उच्चतर शिक्षा को द्विभाषी या भारतीय भाषाओं में करने की बात को स्वीकार किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में मुद्दा - 14.4.2 सरकार द्वारा उठाए जाने वाले कदम में बिंदु (ङ) के अनुसार उच्चतर गुणवत्ता युक्त ऐसे उच्चतर शिक्षण संस्थानों का निर्माण और विकास करना जो स्थानीय / भारतीय भाषाओं में या द्विभाषी रूप में शिक्षण कराए। इसी प्रकार क्रमांक 14.4.2 में उच्चतर शैक्षिक संस्थानों द्वारा उठाए जाने वाले कदमों में बिंदु (छ) में ''भारतीय भाषाओं और द्विभाषी रूप से पढ़ाए जाने वाले अधिक डिग्री पाठ्यक्रम विकसित करने की बात कही है।''

यह आनंद का विषय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में किए इन प्रावधानों के क्रियान्वयन पर कार्य भी प्रारंभ हो गया है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) ने अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तेलगु, तमिल, मलयालम एवं बांग्ला कुल आठ भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग की पढ़ाई हो सके, इस हेतु पाठ्यपुस्तकें तैयार कर ली है। इसी प्रकार कुछ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (NIT), भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT) आदि तकनीकी संस्थानों में भी भारतीय भाषाओं में पाठ्यक्रम तैयार करने का कार्य तथा द्विभाषा में पढ़ाना प्रारंभ कर दिया है।

इस अमृत काल में स्वावलंबी, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी भारत के निर्माण के लिए ऐसे बीजारोपण तथा पौध-संवर्धन करें कि पच्चीस वर्ष उपरांत जब हम शताब्दी वर्ष मनायें तब स्वदेशी समाज के संकल्प के साथ असंख्य महापुरुषों के सपनों के भारत को मूर्त रूप दे पाएं।

''हो यही संकल्प अपना, राष्ट्र हित में प्राण हो,
आत्मनिर्भर, स्वावलंबी राष्ट्र का निर्माण हो ।।''

सन्दर्भः

1. साहित्यिक ऋषि - रवीन्द्र, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
2. स्वदेशी समाज, पांडुरंग सदाशिव साणे
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
4. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के बेवसाईट से
5. हिंदी भाषा के प्रबल पक्षधर महात्मा गांधी, आंच - मासिक पत्रिका
6. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, रचना भोला

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
जयपुर

पर्यावरण सरंक्षण को संवर्धित करती राजस्थान की खेती

वीरेन्द्र कुमार परिहार

मानव जीवन प्रकृति की देन है। इस प्रकृति के असंख्य उपकारों के प्रति कृतज्ञता व मानवीय दृष्टिकोण को अपनाना हमारी परंपरा रही है । हम जीवन में आरंभ से अंत तक हमेशा प्रकृति की गोद में अपने को सुरक्षित महसूस करते आये हैं। हमारे पौराणिक ग्रंथों में भी प्रकृति से जुड़े प्रत्येक अवयव को देवतुल्य माना गया है। जल, अग्नि, वनस्पति, पृथ्वी की पूजा हमारे यहां आदिकाल से अनवरत होती आ रही है । पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के चलते आज संपूर्ण मानव जाति भौतिक सुखों की चकाचौंध में अपनी नैसर्गिक विरासत को नष्ट करती जा रही है।

आइए हम कुछ देर रुक कर पर्यावरण को बचाने के लिए सोचे और गंभीर चिंतन करें ।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है । एक तरफ खतरा ग्लोबल वार्मिंग का है तो दूसरी तरफ तेज गर्मी के साथ आने वाली हानिकारक किरणों का । बढ़ती पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या से मानव जाति को संकट का सामना करना पड़ रहा है। प्रदूषित पर्यावरण का प्रभाव पेड़ पौधों और फसलों पर भी पड़ता है। समय के अनुसार वर्षा नहीं होने के कारण फसलों का चक्रीयकरण प्रभावित हुआ है। एक और समस्या है घटता भूजल स्तर । हम सब को एकजुटता से संकल्पित होकर पर्यावरण बचाने के सामूहिक प्रयास तेज करने होंगे।

लगातार बढ़ते प्रदूषण के कारण पारिस्थितिकी असंतुलन का भी सामना करना पड़ रहा है। इससे प्रकृति की व्यवस्था गड़बड़ा रही है।

मरुस्थलीय क्षेत्र की बहुलता होने के कारण हमें पर्यावरण को संरक्षण देने वाले वृक्षों को बचाना चाहिए । हमें खेजड़ी, केर, कुम्हट जैसी वनस्पतियों का संरक्षण करना चाहिए ताकि मरुस्थल का प्रसार रुके। आंवला, अनार और सहजन जैसी वनस्पतियों को लगाना चाहिए।

कल्पवृक्ष के रूप में मान्यता प्राप्त खेजड़ी वृक्ष की हमारी सनातन संस्कृति में पूजा होती आयी है। खेजड़ी वनस्पति राजस्थान के मरूस्थली क्षेत्र विशेषकर जोधपुर, बाड़मेर जैसलमेर, बीकानेर, चुरू, जालोर जिलों में बहुतायत से पाई जाती है। राज्य वृक्ष के रूप में विख्यात खेजड़ी बहुत कम रह गई है। इसे विलुप्त होने से बचाने की आवश्यकता है। खेजड़ी पर्यावरण सरंक्षण को पल्लवित, पुष्पित करने वाली वनस्पति के रूप में भी अहम स्थान रखती है। खेजड़ी का धार्मिक महत्व भी है। दशहरा के दिन इसकी पूजा की जाती है। खेजड़ी एक बहुवर्षीय पौधा है जिसे प्रोसोपिस सिनेररिया के नाम से भी जाना जाता है। इसे स्थानीय भाषा में जारी, कांडी, शमी आदि नामों से भी जाना जाता है। अभी लगातार चिंतनीय बात यह है कि खेजड़ी का वृक्ष धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है, इसलिए इसके संरक्षण की आवश्यकता है। खेजड़ी का वृक्ष तेज गर्मी सहन कर सकता है इसलिए यह तेज गर्मी में भी हरा-भरा रहता है । खेजड़ी की छाल से पेट के कीड़े मर जाते हैं और सर्दी, खांसी, जुकाम में राहत मिलती है। खेजड़ी का एक मुख्य फल होता है सांगरी । आज तीन सितारा होटलों में पंचकुटा की सब्ज़ी बहुत लोकप्रिय हो रही है। यह सब्जी केर, सांगरी, कुमट, गुन्दा और अमचूर से बनाई जाती है। शीतला अष्टमी पर इसका पूजन किया जाता हैं। खेजड़ी वृक्ष विश्नोई समुदाय में बहुत लोकप्रिय है। वे इसे पूजते है। खेजड़ी ने मरु प्रसार को रोकने का अहम काम किया है। काजरी संस्थान जोधपुर ने खेजड़ी पर बहुत अच्छा

अनुसंधान कार्य किया है। बहुपयोगी नीम का वृक्ष भी पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है। नीम को अजडिरेक्ट इंडिका भी कहा जाता है। औषधीय गुणों से भरपूर नीम में एन्टी बायोटिक तत्व पाए जाते हैं। इसके कारण नीम घाव, दाद, खुजली जैसे रोगों में रामबाण औषधि है। नीम लगाकर हरियाली तो कर ही सकते हैं, साथ ही पर्यावरण को भी बचा सकते हैं। नीम आज जैविक खेती का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। आज पूरे देश में नीम लेपित यूरिया का प्रचलन बढ़ रहा है।

नीम के संवर्धन के लिए यहां पश्चिमी राजस्थान के एक सुप्रसिद्ध पर्यावरण संरक्षक स्वर्गीय किशोर मल खीमावत का जिक्र करना उचित है। उन्होंने अपने जीवन काल में जोधपुर एवं पाली जिले की अधिकांश सड़कों के किनारे हजारों नीम के वृक्ष लगाए जिससे पर्यावरण सुरक्षित भी हुआ और इसका संरक्षण भी। आज इन मार्गों से गुजरने वाले यात्रियों को एक सुखद छांव का एहसास होता है।

आंवला भी पर्यावरण को संवर्धित करता है। आंवला एक बहु उपयोगी औषधि के रूप में भी काम करता है। आंवले का सेवन करने से नेत्र ज्योति मजबूत होती है और शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। आंवले से मुरब्बा, कैंडी और जूस आदि बनाए जाते हैं जिनका सेवन लगातार बढ़ रहा है। पश्चिमी राजस्थान के साथ-साथ अधिकांश क्षेत्रों में आंवले के पेड़ लगाए जा रहे हैं जिनसे छांव मिलती है और साथ ही आरोग्य भी ।

पर्यावरण संरक्षण को औषधीय पादप भी संवर्धित करते हैं। राजस्थान आज औषधीय पौधों की खेती का मुख्य केंद्र बनता जा रहा है। अश्वगंधा, कालमेघ, गूगल, ग्वारपाठा, तुलसी, गिलोय जैसी वनस्पतियां भी पर्यावरण संरक्षण को सशक्त करती है। राज्य के अधिकांश किसान आज औषधीय पौधों की खेती करने लगे हैं। औषधीय पादपों की खेती के साथ-साथ इनके विपणन पर भी ध्यान देने लगे हैं।

पर्यावरण संरक्षण को संवर्धित करने वाला एक और उपयोगी प्रसिद्ध वृक्ष है सहजन । इसका वानस्पतिक नाम है मोरिंगा ओलिफेरा। इसे सेंजन और सहजना भी कहा जाता है। पोषक तत्वों से भरपूर इस वृक्ष को औषधीय भंडार भी कहा जाता है। मानव जाति के लिए कुदरत का उपहार के रूप में प्रसिद्ध सहजन 300 रोगों से मुक्ति के लिए भी काम आती है। आज किसानों द्वारा खेत की मेड पर सहजन के वृक्ष लगाने का प्रचलन लगातार बढ़ रहा है ताकि पर्यावरण संरक्षित हो सके।

इसके साथ मरूस्थली क्षेत्र में सेवण घास भी पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है। सेवण घास जल को संवर्धित करती है। यह घास जैसलमेर में ज्यादातर पायी जाती है। साथ ही धामण घास भी पर्यावरण को प्रोत्साहित करती है। पर्यावरण को बचाये रखती है। यह भूमि को बांधकर रखती है। मरुस्थल में गुन्दा, केर, कुम्हट भी पर्यावरण को बचाने वाली वनस्पतियां है । इनको लुप्त होने से बचाने की आवश्यकता है।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में खेजड़ली की महान् वृक्षप्रेमी अमृता देवी के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। जोधपुर जिले के खेजड़ली गांव के 363 लोगों ने अमृता देवी के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने शीश कटवा दिए थे। पर्यावरण को बचाने के लिए इससे बड़ा त्याग अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूरे जीवन काल में एक पेड़ तो अवश्य लगाना ही चाहिए। जब तक हम वृक्ष लगाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी नहीं समझेंगे तब तक यह मिशन कामयाब नहीं होगा । हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि पेड़ बचेंगे तो हम बचेंगे। पर्यावरण जागरूकता आज की आवश्यकता है। आइए हम सब मिलकर ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने का संकल्प लें क्योंकि पेड़ लगाने से बढ़कर कोई पवित्र काम हो नहीं सकता।

कार्यक्रम निर्माता (कृषि दर्शन)
दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर

पोषक अनाज: पोषण सुरक्षा और स्वस्थ जीवन का आधार

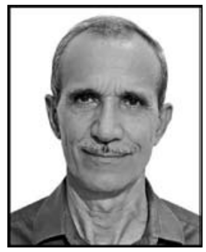

डॉ. ओमप्रकाश खेदड

पोषक अनाज मानव शरीर के सामान्य कामकाज के लिए आवश्यक अधिकांश पोषक तत्व प्रदान करते हैं। यह एशिया और अफ्रीका के आर्थिक रूप से वंचित स्थिति में रह रहे लोगों का मुख्य खाद्य स्रोत हैं। अपनी सूखा सहनशीलता के कारण पोषक अनाज दुनिया भर के सूखा ग्रस्त क्षेत्रों के लिए व्यापक रूप से भोजन और चारे के लिए उगाया जाता है। पोषक अनाज को पहले घरेलू अनाज के रूप में उपयोग में लिया जाता था। पोषक अनाज की मानव सभ्यता की शुरुआत के साथ से ही खेती की जाती रही है। यह पारंपरिक अनाज है, जो पिछले 5000 से अधिक वर्षों से भारतीय उपमहाद्वीप में उगाया और खाया जाता है। पोषक अनाज छोटे दाने वाले, वार्षिक, गर्म मौसम के अनाज हैं जो मानवता के लिए ज्ञात सबसे पुराने खाद्य पदार्थों में से एक हैं, लेकिन गेहूं और चावल जैसी अधिक उपज देने वाली फसलों के कारण प्रतिस्थापित कर दिए गए। अधिकांश पोषक अनाज भारत की मूलभूत फसलें हैं। सामान्य तौर पर पोषक अनाज वर्षा आधारित फसलें हैं जो कि सूखा और अत्यधिक गर्मी के प्रति सहिष्णु है। पोषक अनाज शुष्क क्षेत्रों की महत्वपूर्ण फसलों में से एक है, जिसकी खेती इस देश के बड़े हिस्से में प्राचीन काल से की जा रही है। अन्य लोकप्रिय अनाजों की तुलना में इन्हें पानी और उर्वरता की कम आवश्यकता होती है, लेकिन पोषक तत्वों से भरपूर व अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास के साथ ये सिंचित और उच्च पोषक तत्व प्रबंधन की स्थिति में भी उगाये जा रहे हैं। पोषक अनाज : ज्वार, बाजरा, रागी, सांवा, चीना, कंगनी, कोदो और कुटकी जैसी फसलों का एक समूह है।

ज्वार

बाजरा

रागी

सांवा

पोषक अनाज एवम् खाद्य और पोषण सुरक्षा

दुनिया भर में लाखों लोग कुपोषण से पीड़ित हैं। कभी-कभी उन्हें जीवित रहने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं मिलता है या उन्हें अपने द्वारा खाए जाने वाले खाद्य पदार्थों से स्वस्थ जीवन जीने के लिए आवश्यक पोषक तत्व नहीं मिलते हैं। हालाँकि, भारत में भूखमरी के मामले कम हैं, लेकिन कुपोषण, विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं में व्यापक, तीव्र और खतरनाक भी है। असंतुलित आहार में सबसे अधिक देखी जाने वाली कमियाँ लोह (Fe), जिंक

(Zn), कैल्शियम (Ca) आदि हैं। पोषक अनाज लंबे समय तक गरीब आदमी की फसल मानी जाती रहीं है। खाद्य और पोषण सुरक्षा, प्रतिकूल मौसम और कम उपजाऊ मिट्टी की स्थिति में खाद्य उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता के बारे में बढ़ती चिंताओं के साथ, लगातार बढ़ती आबादी के लिए पोषक अनाज का उत्पादन करने की तत्काल आवश्यकता है। पोषक अनाज में उच्च पोषक मूल्य के कारण देश में ग्रामीण और शहरी, गरीब और अमीर दोनों तरह के उपभोक्ताओं के भोजन में पोषक अनाज के प्रवेश करने की अच्छी संभावनाएं हैं। पोषक अनाज की उच्च प्रोटीन क्षमता शाकाहारी भोजन में ऊर्जा की कमी को पूरा करती है। पोषक अनाज वर्तमान और भविष्य के लिए पोषक तत्वों से भरपूर खाद्यान्न है।

पोषक अनाज एवम् पोषण महत्व

पोषक अनाज पोषक तत्वों से भरपूर खाद्यान्न है जो मनुष्यों और मवेशियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए पोषण के भंडार के रूप में काम आता है। पोषक अनाज ऊर्जा के सबसे सस्ते स्रोतों में से एक है। पोषक अनाज उच्च रेशा, प्रोटीन, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, आवश्यक अमीनो एसिड, फोलिक एसिड, विटामिन ई और आयरन, मैग्नीशियम, कॉपर, पोटैशियम, फॉस्फोरस, जिंक, कैल्शियम जैसे खनिजों का उच्चतम स्रोत हैं। पोषण और स्वास्थ्य लाभों ने विभिन्न प्रकार के पोषक अनाज की मांग में वृद्धि की है। पोषक अनाज में 7-12% प्रोटीन, 2-5% वसा, 65-75% कार्बोहाइड्रेट और 15-20% रेशा होता हैं। पोषक अनाज में प्रोटीन का आवश्यक अमीनो एसिड प्रोफाइल अन्य अनाज से बेहतर है। पोषक अनाज फॉस्फोरस और आयरन के अच्छे स्रोत होते हैं। रागी में धान या गेहूं की तुलना में कैल्शियम लगभग 10 गुना अधिक होता है। पोषक अनाज की अधिकतर नई किस्में लोह और जिंक से भरपूर हैं जैसे: बाजरा की किस्में एमएच 2173 (83 पीपीएम आयरन और 46 पीपीएम जिंक) और एमएच 2174 (84 पीपीएम आयरन और 41 पीपीएम जिंक) ।

पोषक अनाज एवम् मानव स्वास्थ्य

पोषक अनाज में स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले गुण होते हैं जो निम्नलिखित हैं -

- ये ग्लूटेन मुक्त और गैर- एलर्जेनिक हैं और उदर संबंधी रोगियों के लिए गेहूं या ग्लूटेन युक्त अनाज का विकल्प हो सकते हैं।
- हमारे आंतरिक पारिस्थितिकी तंत्र में सूक्ष्म वनस्पतियों के लिए प्रोबायोटिक आहार के रूप में कार्य करते हैं।
- पोषक अनाज में आहार रेशा अधिक होने के कारण भूख में संतुष्टि प्रदान करता है और मोटापा कम करने में मदद करता है।
- पोषक अनाज ट्राइग्लिसराइड्स और सी- रिएक्टिव प्रोटीन को कम करता है, जो हृदय रोग को रोकता है।
- मधुमेह के खतरे को कम करता है और पित्त पथरी और पेट के अल्सर को रोकने में फायदेमंद होता है।
- रक्ताल्पता, यकृत विकार और अस्थमा को कम करता हैं।
- कब्ज़ से बचाता है।
- टाइप II मधुमेह के खतरे को कम करता हैं।
- एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होने के कारण ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करता है।
- उच्च रक्तचाप को कम करता हैं।
- अम्लीय विरोधी होता है।
- पेट के कैंसर के जोखिम को कम करता हैं।
- पोषक अनाज में मौजूद नियासिन कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है।
- पौष्टिक अनाज फाइटेट्स, पॉलीफेनोल्स, टैनिन, एंथोसायनिन, फाइटोस्टेरॉल और पिनाको सैनॉल के साथ एंटीऑक्सीडेंट गतिविधियों में योगदान देता है, जिसमें उम्र बढ़ने और पाचन संबंधी रोगों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

परामर्शदाता, श्योराम यादव, तकनीकी सहायक
मिलेट्स विकास निदेशालय, कृषि एवम् कृषक कल्याण मंत्रालय, कृषि एवम् कृषक कल्याण विभाग, भारत सरकार, केन्द्रीय सदन, विद्याधर नगर, जयपुर।

पृथ्वी की पीड़ा और उसका उपहार

मीनाक्षी हल्दानियाँ

मेरी गोद में पला बढ़ा तथा मुझ पर अठखेलियाँ करके मुझे ममतामयी एहसास कराने वाला यह मानव आज इतना बड़ा हो गया है कि मानो इसके पैर आसमान तक पहुँच चुके हैं। यही वजह है कि मेरे साथी ग्रह मंगल पर भी अपनी छाप छोड़ी है। मैं हैरान हूँ कि क्या यह वही मानव है? जो पहले जानवरों के बीच रहकर जंगल में गुजर-बसर करता था तथा जंगली जानवरों के बीच उनकी देखरेख में पला बढ़ा है। वहीं जानवर भी इनके साथ ही रहा करते थे। इन इंसानों का दुख जानवर तथा जानवरों का दुख इंसान इस कदर समझते थे कि जैसे आपस में एक दूसरे के पूरक हों। इंसानों और जानवरों के बीच, पेड़-पौधों के सामंजस्य के साथ एक रिश्ता बना हुआ था। यह रिश्ता विश्वास की डोर पर कायम था। जानवर इंसानों पर विश्वास करता था, पेड़ पौधों पर आश्रित रहता था। आज मैं यह सोच कर खुश हो जाती हूँ कि यह मानव आज कहां से कहां पहुँच गया है। इससे पहले मानव गुफाओं में गुजर-बसर कर, कंदमूल खाकर जीवन यापन करते थे। आज गगनचुम्बी इमारतों में रहकर एक से बढ़कर अनेक प्रकार के पकवान बनाकर खातें हैं तथा इंसानों ने साहित्य, कला, संस्कृति, धार्मिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक उन्नति में मुझ पर रहने वाले अन्य प्राणियों में श्रेष्ठ प्राणी का दर्जा प्राप्त किया है। आज मैं महसूस कर रही हूँ कि मानव एक से बढ़कर एक वैज्ञानिक आविष्कार करके मुझे आश्चर्यचकित कर रहा है परंतु मुझे जख्मी, घायल और छलनी कर रहा है ।

आज मैं पृथ्वी दिवस पर अपनी व्यथा से सबको अवगत कराती हूँ कि मैं कितनी पीड़ा में हूं । मानव ने बहुत सी गगनचुम्बी इमारतों का निर्माण कर लिया है, जिन्हें फ्लैट्स का नाम दिया जा रहा है! इन फ्लैट्स का वजन उठाने के लिए न जाने कितनी गहराई तक मुझे खोदा जाता है । कई प्रकार के औजारों का प्रयोग किया जाता है तथा न जाने कितनी गहराई तक मुझे खोद-खोद कर घायल, जख्मी किया जाता है। अनेकों प्रकार के खनन के द्वारा मेरा बेतरतीबी से दोहन किया जा रहा है तथा मेरे भूगर्भ से जल प्राप्त करने के लिए अनेकों नलकूप स्थापित किए जाते हैं, जिनसे मुझे बहुत तकलीफ होती है । लेकिन मैं अपनी हो जाती हैं, इनसे अब अश्रु धारा नहीं बह सकती क्योंकि मानव आँसू बहाने के लिए मेरे अंदर पानी की एक बूँद तक नहीं छोड़ना चाहता है।

मैं बहुत खुश थी, जब मैं हरी भरी रहती थी । मानव ने फल, सब्जी, अनाज उगाकर मुझे सजाया था । कई प्रकार

के फूलों से, केसर की क्यारियों से मेरा आंचल महका दिया था।

आज भाँति-भाँति के रसायनों का प्रयोग करके मुझे बहुत अधिक प्रदूषित कर दिया है। अब मैं आपको ज्यादा ना सही थोड़ा सा ही इन प्रदूषणों के बारे में बता देती हूँ। पहला वायु प्रदूषण है जो कि आप खुद जानते हैं, मेरे हरे भरे आँचल रुपी पेड़ों की हरियाली को काटने के कारण हुआ है। यही वजह कि वातावरण में पाई जाने वाली 0.03% कार्बन डाइऑक्साइड गैस, हमारी 21% प्राणवायु अर्थात ऑक्सीजन गैस पर इतना हावी हो गई है कि प्रदूषण के कारण हमारी आने वाली मानव पीढ़ी को नाना प्रकार के रोग होने लगे हैं।

अब बात करूँ, जल प्रदूषण की तो आपने आविष्कार के क्षेत्र में क्या-क्या नहीं किया है, जहाँ थल मार्गों पर वाहन चलाकर वायु प्रदूषण फैलाया है और जल मार्गों पर बड़े-बड़े जहाज चलाकर हमारे जलीय जीव-जन्तुओं के स्वच्छ वातावरण को प्रदूषित किया है, जिससे आम और खास व्यक्ति ही नहीं अपितु जीव जंतु भी दूषित पानी पीकर, दूषित जल से होने वाली बीमारियों का शिकार होने लगे हैं। पानी में भी पेट्रोलियम रसायनों के कारण अशुद्धता का समावेश हो जाता है।

अब मैं अपने मौलिक स्वरूप की बात करती हूँ अर्थात उपजाऊ भूमि एवं मृदा की यह मेरा आँचल है। इस पर न जाने कितने रसायनों का प्रयोग किया गया है, अनगिनत फैक्ट्रियों से निकलने वाला हानिकारक गंदा रसायन आकर मुझ पर फैलता है, इससे मेरी उपजाऊ क्षमता कम हो गई है। अतः अब मैं बंजर धरती के सिवाय कुछ नहीं, ऐसे में मुझे बंजर बनाने वाले रसायन इस कदर मुझ में बसते हैं मानो पैदाइशी मेरे साथ हैं। इस पर मानव द्वारा बनाई गई प्लास्टिक ने तो ऐसा हाहाकार मचा रखा है कि धरती का गौ-वंश ही खतरे में पड़ चुका है, क्योंकि अनुपयोगी पॉलिथीन का कचरा, जो कि मुझ पर ऐसे ही फैला रहता है कि मुझे उससे बचाने के लिए, उस बेकार पॉलिथीन युक्त कचरे को खाने से, हमारे गौ-वंश की समस्त प्रजाति को खतरा हो रहा है। पॉलिथीन का जहर मेरे अंदर घुलकर मुझे बहुत नुकसान पहुँचाता है।

जब पानी कई दिनों तक मुझ पर इकट्ठा रहता है तब मेरे उपजाऊ भाग पर, यदि अधिक मात्रा में खाद तथा कंपोस्ट डाले जाते हैं तो मुझ में लवण की मात्रा अधिक हो जाती है जिससे मेरी उपजाऊ क्षमता कम हो रही है। मैं अपने हरेभरे आँचल को छोटा होते हुए देख रही हूँ, वहीं मेरा भू-गर्भिक जलस्तर इतना नीचे होता जा रहा है कि मेरे आँचल की हरियाली पेड़ पौधों के कम होने के कारण नष्ट होती जा रही हैं। अगर पेड़ पौधे ही नहीं रहे तो मैं कैसे जी पाऊंगी? मुझ में लवण की मात्रा इतनी बढ जाएगी कि एक आम इंसान को भोजन के रूप में न जाने कौन-कौन से रसायन युक्त दवाओं का सेवन करना पड़ेगा। मैं नहीं चाहती हूँ कि मानव या कोई जीव मेरे रहते हुए किसी दुख अथवा तकलीफ का सामना करें, क्योंकि एक माँ अपने ही सामने अपनी संतान को तकलीफ में नहीं देख सकती है। अतः मेरे प्यारों! मैं अभी से आपको आगाह करती हूँ कि संभल जाओ तथा हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि कोई छोटी बात या छोटी सी सावधानी अगर हमारी रक्षा करता है तो हमें उसे अपनाना चाहिए, लेकिन यदि कोई असावधानी अगर लगातार होती रही तो वह दिन दूर नहीं जब भयावह प्राकृतिक आपदा का सामना आपको और मुझे करना पड़ सकता है। अभी कुछ ही दिनों पहले आपने कोरोना महामारी का सामना किया है। इसीलिए हो सके तो संभल जाओ। आगे आओ, हाथ बढ़ाओ और मुझ पर हो रहे प्रदूषण को दूर भगाओ। यह प्रदूषण तभी कम हो सकता है, जब मेरे जन्मदिन अर्थात् पृथ्वी दिवस के दिन आप एक-एक पौधा उपहार स्वरूप मेरे आँगन में लगाते रहो और मेरे आँचल को हरा-भरा करते रहो, अन्यथा मेरी आँखों में आँसू ऐसे ही बहते रहेंगे। अब यह आप पर निर्भर है कि आप क्या चाहते हैं? मेरी आँखों में खुशी या आँसू चाहते हैं?

प्राथमिक शिक्षिका

तपः

तपः शब्द का अर्थ है मन्त्र सिद्धि के लिए कृच्छ साधना। शौच साधना के लिए तुम्हें जन हितार्थ क्लेश सहन करना ही पड़ेगा, ऐसा कोई आवश्यक नहीं। जो लखपति है, उसके लिए दस रुपये दान करना जरा भी कृच्छ साधना नहीं है। इसलिए तप भी नहीं है, किन्तु यही दस रूपये दान करना उसके मानसिक शौच विधान में सहायक है। तपः साधक और तापस की यही तो तपस्या है - स्वेच्छा से क्लेश स्वीकार करना। इसके पीछे एक ही उद्देश्य होगा और वह होगा अपने कन्धे पर क्लेश तथा दुख का बोझा लेकर, दूसरे को दुःख से, क्लेश भाव से, छुटकारा देना तथा दूसरे को आराम से रखना। शौच साधना के समान ही तपः साधना में भी, तिल भर भी व्यावसायिक मनोभाव अनुचित है। शूद्रोचित सेवा प्रायः तपः के अन्दर गिनी जा सकती है। इसलिए जो शूद्रत्व से डरता है, शूद्र से घृणा करता है, उसके लिए तापस होना कभी भी सम्भव नहीं है। एक रोगी कष्ट से छटपटा रहा है, उसके आराम के लिए यदि तुम घंटो उसकी सेवा करो, वह हुआ 'तप'। किन्तु यदि तुम स्वार्थ के मनोभाव से सोचो कि हमारे दुर्दिन में यह भी हमारी सेवा करेगा, तब एक मुहुर्त्त में ही तुम्हारी सारी तपस्या नष्ट हो गई। इस प्रकार तपः साधना, शरीर और मन को स्वार्थ बोध के बाहर ले जाता है। स्वाभाविक नियम से, तपः साधना से मानसिक व्यापकता आयेगी ही और इस व्यापकता से साधक को ईश्वर - प्रणिधान की सिद्धि में विपुल सहायता मिलेगी। तपः साधक जानता है कि सेव्य उसके ही इष्ट हैं, सेव्य उसके ही ब्रह्म हैं। वह सेवक है और सेवा ही उसकी साधना है। सेव्य की जाति कुल, वर्ण, धर्म, देश या मत विचार कर जो सेवा के लिए तत्पर होते उनकी तपस्या भी व्यर्थ होती है; क्योंकि इस प्रकार के अधिकांश साधकों में, मानसिक उदारता का अभाव होने के कारण सेवा भी ठीक निष्ठा के साथ करना उनके लिए सम्भव नहीं हो पाता। जो सेव्य को ब्रह्म का विकास मात्र देखते हैं, उनके आराम के लिए निःस्वार्थ भाव से लगे रहते हैं, बहुत थोड़े समय में ही उनके भीतर ब्रह्म प्रेम या भक्ति जग उठती है और जहाँ प्रेम जग गया, जहाँ भाव स्फूर्त हो उठा, वहाँ और बाकी क्या रह गया? इस तपः साधना में ज्ञान अथवा विचार का कितना स्थान है, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। वास्तव में शौच साधना के अङ्ग के रूप में जन सेवा में ज्ञान की जितनी आवश्यकता हैं, तपः के अंध-स्वरूप जन सेवा में ज्ञान की आवश्यकता उससे बहुत अधिक है। ज्ञान वर्जित होने से तपः का अपव्यवहार होगा ही। सुविधावादी तुम से काम निकाल कर एक तरफ तुम्हारी शक्ति का अपव्यय करायेंगे, दूसरी तरफ जो सचमुच दुखी है, उन्हें तुम से जो सेवा प्राप्त होती उससे वंचित कर देंगे।

यदि कोई कंजूस तुम्हारे पास आकर अपना दुखड़ा रोये, गिड़गिड़ाये और उसका दुःख कष्ट दूर करने के लिए तुम उचित परिश्रम करो; उसके लिए रुपये, पैसे से या शरीर से सेवा करने की व्यवस्था करो, तो वहाँ तुम्हारा तप ज्ञान और विचाररहित होने के कारण व्यर्थ हो जायेगा। क्योंकि पहली बात तो यह होगी कि जिस कंजूस धनी की तुम सेवा करोगे वह और अधिक कंजूस और स्वार्थी हो जायेगा और बाद में सेवाव्रती लोगों को और भी ठगने की चेष्टा करेगा, दूसरा उसके स्वरूप कुछ न कुछ जान लेने के कारण तुम्हारे मन में भी एक प्रकार की ग्लानि उत्पन्न होगी, उसके प्रति तुम्हारे मन में कुछ शत्रुता का भाव जग जायेगा इसीलिए तप का अनुशीलन करने के समय यह अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि तुम जिसकी सेवा करने जा रहे हो, उसे सचमुच तुम्हारी सेवा की जरूरत है कि नहीं और यह जान कर ही सेवा के काम में लगना चाहिए।

तप की साधना के समय सदा ही नीचे की ओर

देखना चाहिए, ऊपर की तरफ नहीं। जो तुम से दुर्बल है, तुम से दरिद्र है, तुम से अशिक्षित है, भोले और अवहेलित है, उनके लिए ही तुम पर अधिक भार है, उत्तरदायित्व है । जो तुम से ऊँची श्रेणी के लोग हैं, अर्थात तुम से अधिक धनी हैं, अधिक शक्तिशाली हैं उनके लिए तुम्हारा दायित्व. बहुत कम है। इसलिए कहाँ तुम्हारी जबाबदेही कितनी है, यह ज्ञान की सहायता से जान लेना होगा, नहीं तो तप में लगाया गया समय सामर्थ्य, परिश्रम सब पानी हो जायेगा ।

धनिकों को भोज देने में क्या लाभ ? दाने-दाने के मुहताज गरीबों को अन्न दो । ऊपर के लोगों के घर में डाली पहुँचाने से, भेंट चढ़ाने से लाभ नहीं। गरीब रोगियों के घर पर दवा और पथ्य पहुँचाओ । धनी सम्पन्न लोगों की खुशामद में समय नष्ट करने से लाभ नहीं, जो विपन्न हैं, दुखी हैं, उनके मन को अपनी सहृदयता की मिठास से जीत कर, उन्हें अपने समाज की श्रेणी में ऊपर उठा लो ।

ज्ञान रहित तप के द्वारा तुम ब्रह्म को नहीं पा सकते, क्योंकि वहाँ तुम्हारी वस्तु का उपयुक्त व्यवहार नहीं होता। परन्तु यह बात भी ठीक है कि कुछ न करने से कुछ करना ही अच्छा है। इस दृष्टि से ज्ञानवर्जित तप भी अच्छा है। बुद्ध ने कहा है-

जिन कदरियं दानेन
सच्चेनः अलीकवादिनम्

कंजूस के सामने अपना दान दिखा कर उसे प्रभावित अवश्य किया जा सकता है; परन्तु इसे ठीक अर्थों में तप नहीं कह सकते ।

तप की एक और विशेषता है और वह यह है कि मनुष्य में जब तक ज्ञान का अभाव रहता है, तब तक वह अपनी कार्यशक्ति को प्रवृत्तिमूलक कार्यों में ही लगाता है । ज्ञानयुक्त तप इस कर्मधारा को मोड़ देता है, उसे निवृत्ति की ओर घुमा देता है । भक्ति से भी ज्ञान का उदय होता किन्तु यह भक्ति उसके हृदय में जगना असम्भव है जिसने अपने अन्दर उस परम प्रभु की कृपा नहीं पाई है ।

-साभार : जीवन वेद से

संस्कृति तब तक गूंगी है जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नहीं होती, राष्ट्रभाषा नहीं होती।

– महादेवी वर्मा

देशभर को बांधने के लिए भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से एक दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिन्दी की जरुरत है।

–जवाहरलाल नेहरु

भारतीय अर्थव्यवस्था में सिपेट का योगदान

आराधना शुक्ला

प्रस्तावना– केन्द्रीय पेट्रो केमिकल्स इंजीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थान (सिपेट) वर्ष 1968 में प्लास्टिक इंजीनियरिंग ओर प्रौद्योगिकी के साथ विभिन्न विषयों में जनशक्ति का विकास एवं इसके साथ भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्वपटल पर लाने के उद्देश्य के साथ इसकी स्थापना भारत सरकार द्वारा की गई।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ थे, शिक्षा, अनुसंधान कौशल विकास एवं प्रौद्योगिकी जिनको सिपेट ने समझा और प्लास्टिक के रूप में एक बढ़ते हुए विज्ञान के अनुसंधान तथा पर्याप्त कौशल मानव संसाधन की मांग की पूर्ति करने के लिए एक अग्रणी संस्था के रूप में स्वयं को स्थापित किया।

सिपेट के प्राथमिक उद्देश्य एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

शिक्षा और अनुसंधान के मुख्य उद्देश्य के साथ सिपेट ने प्लास्टिक उद्योग के विभिन्न व्यवसायों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किया, जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में प्लास्टिक का दौर आरंभ हुआ। शिक्षा के साथ छात्रों में उद्यमशीलता का भी ज्ञान एवं विज्ञान का विकास भी जागरूक हुआ। भारतीय अर्थव्यवस्था में प्लास्टिक उद्योग को कई उद्यमी एवं कुशल वैज्ञानिक भी सिपेट के ही दूरदर्शिता एवं उद्देश्यों का परिणाम है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में नवीन प्लास्टिक आधारित समाधान के साथ जिन मुख्य कार्यक्रमों का विकास हुआ है, वे हैं शैक्षिक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी सहायता एवं कौशल प्रशिक्षण।

शिक्षा के क्षेत्र में सिपेट एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

शिक्षा के क्षेत्र में सिपेट ने भारतीय समाज के हर वर्ग को प्राथमिकता के साथ हर संभव मार्गदर्शन एवं शिक्षण के साथ प्रायोगिक ज्ञान भी प्राप्त किया। प्लास्टिक एवं इसके प्रसंस्करण परिक्षण एवं विभिन्न तकनीकी का भी ज्ञान प्रसारित किया। सिपेट ने भारतीय शिक्षा को सिर्फ पुस्तकों के ज्ञान तक नहीं अपितु प्रायोगिक शिक्षा के महत्व को भी समझा और समस्त डिप्लोमा, डिग्री, पीएचडी तथा अन्य पाठ्यक्रमों में प्रायोगिक शिक्षा के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रायोगिक रूप से प्रशिक्षित प्लास्टिक पेशेवरों से मानव संसाधन की उपलब्धता कराई है। एक मजबूत अर्थव्यवस्था के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन महतवपूर्ण स्तंभ है।

सिपेट-अनुसंधान एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

सिपेट ने प्लास्टिक उद्योग के क्षेत्र में कई अनुसंधान किये जैसे कि नवीन प्लास्टिक एवं प्लास्टिक उपकरण, पॉलिमर विज्ञान, प्रसंस्करण इत्यादि के माध्यम से इस प्रतिस्पर्धी विश्व में भारत को एक अग्रणी देश के रूप में प्रस्तुत किया।

सिपेट विभिन्न उपकरणों एवं मशीनों के साथ प्लास्टिक व पॉलीमर, डिजाइन, टूरूम, मोल्ड विनिर्माण, प्लास्टिक प्रसंस्करण गुणवत्ता एवं परीक्षण तकनीकी में हमेशा स्वयं को अग्रणी रखते हुये भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। सिपेट अपने तीन अनुसंधान केंद्रों में बहुत ही एवं परिष्कृत अनुसंधान करता है, जो कि एक प्रतिस्पर्धी विश्व में भारतीय अर्थव्यवस्था को पांचवां स्थान दिलाने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सिपेट एवं प्रायोगिकी सहायता

प्लास्टिक उद्योगों का भारतीय अर्थव्यवस्था में अति महत्वपूर्ण योगदान है, चाहे वह नवीनीकरण ऊर्जा हो, इलेक्ट्रिकल या इलेक्ट्रोनिक उपकरण, मशीनें या वाहन, घरेलू उपकरण चाहे हवाई जहाज, कोई पानी का जहाज हो या हर उद्योग में प्लास्टिक का अति महत्व है और प्लास्टिक उद्योग

को आगे बढाने तथा उनकी जरूरतें, जैसे कि मानव संसाधन, प्रशिक्षण, कच्चा माल, अनुसंधान, पूरक संसाधन एवं समाधान सभी में सिपेट अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका को समझता भी है एवं उसे निभा भी रहा है।

सिपेट एक छत के नीचे समस्त समाधानों वाली एकमात्र संस्था है जो आपके विचार (प्लास्टिक/पॉलीमर/पेट्रोकेमिकल्स) को मूर्त रूप प्रदान कर सकता है।

कौशल प्रशिक्षण एवं भारतीय अर्थव्यवस्था तथा सिपेट

किसी भी क्षेत्र में कौशल प्राप्त करना आपको उस क्षेत्र की पराकाष्ठा तक ले जा सकता है, सिपेट विभिन्न कौशल प्रशिक्षणों के माध्यम से देश के हर वर्ग तथा अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक प्लास्टिक संबंधी कौशल को पहुंचा रहा है तथा उन्हें आत्मनिर्भर बना रहा है, उद्यमिता आत्मनिर्भरता एवं रोजगार भारत में बेरोजगारी निर्भिता को दूर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सिपेट गांव, कस्बों तथा देश के हर सुदूर क्षेत्र तक अपने कौशल प्रशिक्षण संबंधी योजनाओं एवं ज्ञान के माध्यम से बेरोजगारी दूर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सिपेट सिर्फ प्लास्टिक प्रसंस्करण ही नहीं अपितु उसके हर आयाम शिक्षण प्रदान करता है। सिपेट सिर्फ रोजगार संबंधी ही नहीं संबंधी प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। प्रशिक्षण के पश्चात् रोजगार माध्यम स्थापित करने में भी सहयोग प्रदान करता है, जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था से बेरोजगारी को खत्म करने की ओर एक महत्वपूर्ण योगदान है।

प्लास्टिक उद्योग एंव भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियां एवं सिपेट की भूमिका

प्लास्टिक उद्योग एक बहुत बडी उपलब्धि है, परंतु सही प्लास्टिक कचरा प्रबंधन का ज्ञान न होने की स्थिति में यही उपलब्धि एक चुनौती के रूप में देश के सामने आयी तब भी सिपेट ने इस चुनौती को आगे आकर स्वीकार किया एवं अपने अनुसंधान केंद्रों की मदद के साथ प्रशिक्षण केंद्रों की सहायता से प्लास्टिक कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में कई कार्यशालायें आयोजित की, प्लास्टिक प्रबंधन का उचित एवं समुचित ज्ञान आमजन तक पहुंचाया।

पर्यावरण के विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता प्रदान करने के लिए प्रायोगिक कार्यशालाओं का आयोजन, अनुसंधान केंद्रों के माध्यम से पर्यावरण के अनुकूल प्लास्टिक का आविष्कार एवं उपयोग संबंधी ज्ञान आमजन तक पहुंचाया।

प्लास्टिक के पुनःचक्रण की जानकारी एवं उसके लाभ से भी आमजन को परिचित करवाया।

प्लास्टिक एवं पेट्रोकेमिकल्स का सद्उपयोग सिपेट ने बखूबी समझा तथा देश की अर्थव्यवस्था में उसके महत्व को भी आगे रखकर आमजन को इस धारा से जोडने के लिए निरंतर प्रयासरत है। सिपेट निरंतर क्षमताओं का निर्माण कर रहा है एवं उद्योग की विकसित होती आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है।

कोरोना के समय में सिपेट की भूमिका

कोरोना महामारी के कठिन समय में सिपेट ने अपनी जिम्मेदारी को देश के प्रति हमेशा आगे रखा। चाहे वह पीपी किट का निर्माण हो चाहे सेनेटाइज़र के लिए बोतलें, पीपी किट का निस्तारण अन्य कई छोटे परंतु महत्वपूर्ण गतिविधियों में खुद को आगे रख पीपी किट के परिक्षण में भी तथा फेस मास्क परिक्षण में भी सिपेट ने स्वयं को देश के लिए उपस्थित रखा।

सिपेट एवं स्वतंत्र भारत की अर्थव्यवस्था की यात्रा

सिपेट अपने 54वें वर्ष में तथा स्वतंत्र भारत अपने 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है, अर्थात् जब स्वतंत्र भारत ने वयस्कता को प्राप्त किया तथा उसे सिपेट संस्था एक सच्चे साथी के रूप में मिली जिसने भारत की मूलभूत जरूरतों को समझा, और न सिर्फ समझा बल्कि उसे विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था बनाने में हर संभव उन मूलभूत जरूरतों को पूरा करने में अपना पूर्ण योगदान भी दिया।

शिक्षा के क्षेत्र में कौशल मानव संसाधन
अनुसंधान से नई तकनीकी एवं पूरकता।
प्रौद्योगिकी विकास से औद्योगिक क्षमता को बढ़ावा।
कौशल प्रशिक्षण से उद्यमिता एवं रोजगार।

सिपेट भारत सरकार की एक ऐसी अग्रणी संस्था है, जो अपने देश की अर्थव्यवस्था में पुराने नहीं बल्कि नयेपन से उसे विश्व में अग्रणी रखने के लिये हमेशा कार्यरत है।

प्रशासनिक सहायक वर्ग-II, सिपेट, जयपुर

लक्ष्मी की आत्म कथा

कामेश्वर पाण्डेय

मैं लक्ष्मी हूँ। समाज में मेरी बड़ी प्रतिष्ठा है। जिसके पास में रहती है वह अपने को सबसे बलवान और धनवान समझता है। कभी कभी अभिमान के कारण सभी नैतिक हदों को पार कर जाता है। मैं अपनी प्रतिष्ठा पर इतराती हूँ लेकिन कभी कभी मुझे समाज के उस तबके के लोगों पर तरस एवं दया आती है। लेकिन क्या करूँ मैं अचल हूँ। उसके तिजोरी से निकलने की हिम्मत मुझमें नहीं है। समदर्शी होते हुए भी मुझे एक पक्षीय रहना पड़ता है। वह धनवान सेठ या उद्योगपति मुझे कैद कर अपने भाग्य पर खुश होता है। एक बात मैं आप पर छोड़ती हूँ कि उस व्यक्ति के पास किस प्रकार मैं कैद हूँ और मेरे भंडारण का रहस्य क्या है। दिन, महीने, वर्ष एवं युग बीतते जाते हैं लेकिन मेरे कैद की सीमा कम नहीं होती। उसके बाद उसका बेटा, नाती, पोता और परपोता मेरा उपभोग करता है और मैं उसी चहार दिवारी में कैद सिसकती रहती हूँ। आप मुझे इसके लिए भाग्यशाली न समझें। मैं भी बाहर निकल कर समाज की हवा खाना चाहती हूँ, लेकिन क्या करूँ लाचार हूँ। केवल घर की तिजोरी में ही नहीं बैंकों के स्ट्रांग रूम एवं लोकरों में भी मेरी शोभा बढ़ती रहती है।

आइये। मैं अपने एक और पक्ष से आपका परिचय कराती हूँ। ज्यादातर मेरा उपयोग उपकार के बदले अपकार में होता है। मेरे आते ही लोगों में हिंसा, दमन और बर्बरता बढ़ जाती है। दुर्जनता का प्रवेश हो जाता है और मेरा सदुपयोग नहीं दुरुपयोग होने लगता है। आज में सेठ या उद्योगपति के यहां रहती हूँ तो कुछ गनीमत भी है लेकिन कहीं दुर्भाग्य से में किसी माफिया असामाजिक तत्व की तिजोरी में कैद होती हूँ तो वहां दिन रात हत्या, लूट, दमन, निरसता और बलात्कार जैसी घटनाएं मेरे सामने होती रहती है और मैं मूक सब कुछ देखती रहती हूँ। मेरी ही बहनों, माताओं और बेटियों का शील हरण होता रहता है। उस धनपति की इच्छाएं अनंत है और मुझे पाकर उसकी इच्छा शक्ति और प्रबल हो जाती है। एक दिन का खरीदा हुआ कार वह कोडियों के भाव बेचने में अपनी शान समझता है। बड़े बड़े माफियाओं की आदत सी हो जाती है। कभी कभी मुझे अपने आप पर शर्म आती है कि इन सारी हरकतों का कारण मैं ही हूँ। आर्थिक विषमता से ग्रस्त समाज को देखती हूँ तो दया आती है। धन्ना सेठ कीमती भोजन कूड़े के ढेर में फेंक देते हैं और गरीब एवं निर्धन बच्चे उसमें से अपने लायक चीजें निकालते रहते हैं। उस पर भी उस धन्ना सेठ का सिक्यूरिटी गार्ड कभी कभी लट्ठ लेकर उन गरीब बच्चों को जूठे भोजन उठाने से भी रोकता है ताकि बाबू के आलीशान भवन की शोभा न खराब हो जाय। एक दिन मैं एक बड़े माफिये की तिजोरी में पड़ी मुस्कुरा रही थी कि अचानक उसका पोता आया और दादा जी से गोवा जाने के लिए जिद करने लगा। उस माफिये ने एक आवाज पर तिजोरी खोलकर मुझे अपने पोते के हाथ पर रख दिया जैसे मैं नहीं हूँ कागज का बंडल हो। काश उसका जिद्दी और नालायक पोता इसको समझ पाता ।

एक पक्ष से और परिचय कराना चाहती हूँ कि मुझे कैद कर समाज का माफिया वर्ग बहुविवाह की प्रथा को दल देता है और प्रतिवर्ष एक नयी शादी रचाना चाहता है। अपने अहं एवं मिथ्याभिमान की तुष्टि के कारण उन बहुओं (पत्नियों) की हत्या करवा देना उसके बायें हाथ का खेल

होता है। कानून, प्रशासन, नेता और मंत्री मुझे देखते ही लार टपकाने लगते है और माफिया धन्ना सेठ मेरा प्रयोग कर बड़े आसानी से कानून और न्याय को खरीद लेने में अपने को सक्षम पाता है। मुझे सबसे खुशी तब होती है जब उसके यहां कभी कभी खाने पीने का कार्यक्रम होता है और कुछ गरीबों को इसका लाभ मिलता है। एक बार एक दरियादिल माफिया ने जाने किसी खुशी में पूरे इलाके के लोगों को निमंत्रित किया और स्वरुचि भोज के साथ कीमती उपहार भी दिया। सभी आमंत्रित लोग सर्वहारा वर्ग के थे और बहुत खुश थे।

मैं अपनी उपयोगिता पर खूब-खुश थी। यह बात और है कि उस भोजन और उपहार की पूरी लागत से दुगुनी खर्च उसी के महल में बोतलों की खनखनाहट में हो रहा था। वह दृश्य भी बड़ा निराला था।

उनके घरों में कुत्तों के खाने और नहलाने पर जो दैनिक खर्च होता है उस खर्च में एक गांव पूरा माह खाना खा सकता है। और तो और उनके घरों के नौकरों एवं टहलुओं की तरफ और उसके किसी को देखने की हिम्मत नहीं होती। मैं बार-बार यही सोचती हूँ कि इसके मूल में मैं ही हूँ लेकिन क्या करूँ, लाचार हूँ। कोई भी व्यक्ति चाहे बहु ही क्यों न हो घूमना फिरना चाहता है। सारी सुविधाओं से लैस एक कमरे में कैद होना कोई नहीं चाहता है। बन्द कमरे में सांसे रुकने लगती हैं। सारी सुविधाओं के बावजूद अगर एक आदमी बाहरी वातावरण में अपने को नियोजित करना चाहता है तभी तो वह अच्छे बुरे का अनुभव कर सकता है। मैं भी तो इन्सान हूँ। केवल एक जगह कैद होना मैं भी नहीं चाहती हूँ। इसमें कोई संदेह नहीं कि कभी कभी मेरा भंडार भी खोला जाता है लेकिन पूर्ण सुरक्षा के साथ जो मुझे एकदम पसंद नहीं।

इस सम्पूर्ण वैचारिक लेख में लक्ष्मी का मानवीकरण हुआ है जिसके माध्यम से मैंने अपनी भावनाओं को सम्प्रेषित करने का प्रयास किया है। मैं कहां तक अपनी बात आप तक पहुँचाने में सफल हो सका हूँ उसका एक मात्र साक्षी आप ही हैं एवं आप ही न्याय कर सकते हैं कि मैं अपनी लेखनी एवं अभिप्राय के साथ कितना न्याय कर सका हूँ।

पूर्व राजभाषा अधिकारी
हावडा मंडल, पूर्व रेलवे, हावड़ा

सकारात्मक उर्जा एक सागर है

पूर्णा नन्दा महरडा

सकारात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति हर मुसीबत में एक अवसर तलाश करता है,

जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण वाला प्रत्येक अवसर में भी एक मुसीबत पाता है।

किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण का सकारात्मक विकास उसके ऊपर निर्भर करता है। नकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्ति को उसकी सफलता के रास्ते में बाधा उत्पन्न करता है। विभिन्न शोधों से पता चला है कि नकारात्मक सोच प्रतिकूल परिस्थितियों में विचार, आत्मविश्वास, साहस उत्साह, आत्मविश्वास और उत्सुकता आदि में लड़ने की इच्छाशक्ति को घटाती है।

आपको अपने मस्तिष्क को शांति, साहस एवं आशा के विचारों से परिपूर्ण कर लेना चाहिए क्योंकि आप जैसा सोचते हैं, वैसा ही बनते चले जाते है। आप अपने आप में अच्छे एवं पवित्र विचार आपके दृष्टिकोण को इक्च्छित दिशा की ओर अग्रसर करने में सक्षम है।

अपनी शक्तियों में विश्वास रखने वाला व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में कभी भी नहीं घबराता, वह हमेशा अपने वर्तमान परिस्थिति से अच्छी स्थिति प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है। आत्म विश्वासी व्यक्ति सकारात्मक दृष्टिकोण के धनी होते हैं। इनके शब्दों में कभी ऐसा नहीं लगता कि कोई विशेष कार्य असंभव है। वे प्रत्येक निराशा में भी आशा की किरणें खुद ही लेते हैं। उनकी निगाहें सदैव अपने लक्ष्य को प्राप्त करने पर टिकी रहती है और मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को जीतने का उपाय ढूंढ ही लेते हैं ।

साहसी व्यक्तियों ने कठिन से कठिन कार्य को करने में उत्सुकता दिखाई है और अंत में सफल भी हुए हैं। आपका साहस ही आपकी सोच को सकारात्मक प्रदान करेगा और आप किसी भी कार्य को लेकर यह नहीं कहेंगे कि क्या ऐसा हो सकता है? आप कहेंगे- हां मैं ऐसा करूंगा।

आप जिन लोगों से मिलते हैं एवं जिनसे विचारों का आदान प्रदान करते हैं, इसका अच्छा या बुरा प्रभाव आप पर जरूर पड़ता है। प्रयास करना चाहिए कि नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति से दूर ही रहा जाए अन्यथा आप हतोत्साहित महसूस करेंगे और अचानक ऊर्जा शक्ति घट कर तनाव के शिकार हो जायेंगे। सदैव अच्छे विचारों वाले उत्साही लोगों का ही साथ किया जाना चाहिए।

नकारात्मक एक व्यक्ति की सोच बुद्धिमान व आशावादी व्यक्ति के विचारों पर बुरा प्रभाव डालती है। सकारात्मक विचार व इच्छाशक्ति को कभी भी दूसरों की नकारात्मकता से हराया नहीं जा सकता। सकारात्मक सोच एक व्यक्ति को आशावादी और नकारात्मक सोच उसे निराशावादी बनाती है। आशावाद सकारात्मक ऊर्जा का सागर है। एक आशावादी व्यक्ति कभी उत्साह की कमी का अनुभव नहीं करता ऐसे व्यक्ति का जीवन हर कदम हमेशा विजयी होता है।

नराकास कार्यालय-2 के विभिन्न कार्यालयों में आयोजित गतिविधियों की झलकियाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति स्तर पर राजभाषा का उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए उ.प. रेलवे, प्रधान कार्यालय को प्रथम विजेता राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति स्तर पर राजभाषा का उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय को प्रेरणा पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति स्तर पर राजभाषा का उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए कदन्न विकास निदेशालय को प्रथम विजेता राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति स्तर पर राजभाषा का उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए खादी और ग्रामोद्योग आयोग को द्वितीय उप विजेता राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति स्तर पर राजभाषा का उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए केंद्रीय विद्यालय नं. 3, जयपुर को द्वितीय उप विजेता राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति स्तर पर
राजभाषा का उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए
भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण पश्चिम क्षेत्र को
उप विजेता राजभाषा शील्ड
प्रदान करते हुए श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक

श्री विरेन्द्र पाण्डे, वरिष्ठ कार्य सहायक, एमएनआईटी को
हिंदी आशु भाषण प्रतियोगिता में
द्वितीय पुरस्कार प्रदान करते हुए
श्री गौतम अरोड़ा, अपर महाप्रबंधक

श्री विरेंद्र परिहार प्रस्तुति सहायक,
दूरदर्शन केंद्र, जयपुर को
पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री गौतम अरोड़ा,
अपर महाप्रबंधक उ.प. रेलवे, प्र.का, जयपुर

श्री अरविन्द कुमार शर्मा, टीजीटी (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय नं. 3 जयपुर को
पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री गौतम अरोड़ा,
अपर महाप्रबंधक उ.प. रेलवे, प्र.का, जयपुर

कार्यालय मु. अभियंता, के.लो.नि.वि., जयपुर में आयोजित विभिन्न अवसरों के छायाचित्र

कार्यालय में मुख्य अभियंता सहित सभी सदस्यों ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022 के अवसर पर शपथ ग्रहण की

हिंदी प्रोत्साहन मास सितम्बर, 2022 के दौरान कार्यालय में आयोजित होती प्रतियोगिताएं

कार्यालय को नराकास द्वारा राजभाषा पुरस्कार, 2022 हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्ति

कार्यालय में आयोजित राजभाषा हिंदी कार्यशालाएं संबंधित गतिविधियाँ

कार्यालय की राजभाषा कार्यशाला में आमंत्रित अतिथिगण

हिंदी दिवस, 2022 के अवसर पर महानिदेशक के संदेश का समस्त कार्मिकों द्वारा आह्वान

जयपुर दूरदर्शन में आयोजित हिंदी पखवाड़ा के विभिन्न छायाचित्र

केंद्रीय पेट्रोलियम अभियान्त्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सिपेट) में आयोजित कवि सम्मेलन व हिंदी दिवस के विभिन्न छायाचित्र

केंद्रीय विद्यालय क्र.-3 में आयोजित हिंदी पखवाड़ा के विभिन्न छायाचित्र

पुष्कर मेले में केंद्रीय संचार ब्यूरो की अत्याधुनिक मल्टीमीडिया प्रदर्शनी के छायाचित्र

खादी और ग्रामोद्योग आयोग में आयोजित राजभाषा सम्मेलन के विभिन्न छायाचित्र

फाइनल डिलेवरी

कपिल अरोड़ा

अरुन 30 साल का लड़का जो जोमैटो में डिलेवरी ब्वाय की जॉब करता है। एक शाम वो रोज़ की तरह ही एक रेस्टोरेंट के बाहर ऑर्डर का वेट कर रहा था। तभी उसके फ़ोन में नोटिफ़िकेशन आया कि उसे इस जगह पर डिलेवरी देनी है। वो बताए गए रेस्टोरेंट पर पहुँच जाता है और अपने ऑर्डर के तैयार होने तक इंतेज़ार करता है। कुछ ही देर में रेस्टोरेंट के काउंटर से आवाज़ आती है कि उसका ऑर्डर रेडी हो गया है। वो अपना ऑर्डर ले लेता है और जोमैटो के ऐप्लिकेशन पर वो अपडेट कर देता है कि आर्डर ऑन द वे, ऐप पर एस्टिमेटेड डिलेवरी टाइम 28 मिनट्स दिखा रहा होता है।

जैसे ही वो रेस्टोरेंट के बाहर खड़ी अपनी बाइक की तरफ़ जाता है तो वो बहुत ही हैरान हो जाता है। उसकी बाइक के पास एक काले कपड़े पहना इंसान खड़ा होता है, दिखने में बहुत ही डरावना। वो ये सोचता है कि उसको कैसे बोलूँ कि ये मेरी बाइक है। भाई साहब आप हट जाइये। पर 28 मिनिट्स में उसको बताई गयी जगह पर डिलेवरी भी देनी है और वो अपने काम को हमेशा ईमानदारी के साथ करता है। उसने कभी भी आज तक कोई ऑर्डर लेट नहीं किया था।

''भाई साहब, ये बाइक मेरी है । कृपया आप यहाँ से हट जाइये मुझे तुरन्त इस ख़ाने के पैकेट को ऑर्डर करने वाले तक पहुँचाना है।'' अरुन ने उस काले कपड़े पहने इंसान से दबी हुई आवाज़ में बोला । ''हम जानते हैं तुम्हारा नाम अरुन है और तुम बाबू लाल के पुत्र हो तुम्हारी माता का नाम सुमित्रा देवी है । तुम्हारा जन्म दिनांक 24/10/1992 को हुआ था। पर अब तुम्हारा इस धरती पर समय पूर्ण हो चुका है। तुम जैसे ही बाइक स्टार्ट करके थोड़ी दूर चलोगे तो ये सामने के मोड़ पर तुम्हें हार्ट अटैक आएगा और मैं तुम्हारी आत्मा को तय जगह पर ले जाऊँगा।'' उस काले कपड़े वाले इंसान ने जवाब दिया।

ये सब सुनते ही अरुन के पैरो तले ज़मीन खिसक गयी और खिसके भी क्यू ना उसने बात ही ऐसी बोली थी कि सुनके किसी की भी हवा खराब हो जाए। उसने इस बार थोड़ा अकड़ में बोला। ''भाई तेरा नाटक अब ख़त्म हो गया हो तो मुझे जाने दे, मेरे पास इस सब के लिए टाइम नहीं है।'' सामने से जवाब आता है, ''मैं यमदूत हूँ और मुझे यमराज ने यहाँ तुम्हारी आत्मा को ले जाने के लिए भेजा है।'' ये सुनने के बाद तो अरुन के पसीने छूट गये। यमदूत ने अपने थैले में से एक पैग़ाम निकाला और उसे पढ़ के सुनाया कि ''अरुन हाड़ा, पुत्र बाबूलाल हाड़ा, तुम्हारा जन्म दिनांक 24/10/1992 को हुआ था। मैं तुम्हें यमराज की आज्ञा अनुसार तय समय तय तारीख़, जो अभी है, पर तय जगह ले जाने की घोषणा करता हूँ।''

यह सुनकर अरुन के होश उड़ गये थे। अब उसे उसकी बातों पे यक़ीन होने लगा था। उसके पैर कंपकपाने लगे थे, उसके हाथों में जो खाने के पैकेट थे वो भी उसे अब बहुत भारी लगने लगा था। उसे अब कुछ भी समझ भी आ रहा था कि वो क्या करे। बावजूद इसके, उसने यमदूत से विनम्रतापूर्वक बोला, ''ठीक है अगर ऐसा है तो मैं आपके साथ चलने के लिए तैयार हूँ और आपके साथ चलने के सिवाय मेरे पास कोई दूसरा विकल्प भी नहीं है । पर मैं बस इतना चाहता हूँ कि मेरे हाथ में जो यह खाने का पैकेट है वो मैं पहुँचा दूँ। ये मेरी फाईनल डिलेवरी होगी। इसके बाद आप

मुझे लेके चल देना।'' पर यमदूत ने उसे साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि उसे भी सख़्त आदेश है कि उसे उसकी आत्मा को तय समय सीमा के अंदर तय जगह पर पहुँचाना है, अगर नहीं पहुँचाया तो उसे गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। अरुन ने यह सुनकर कहा, ''तो एक तरह से देखा जाए तो तुम भी मेरी तरह delivery boy ही हो, हम दोनों में फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि मैं खाना पहुँचाता हूँ और तुम आत्मा।'' यमदूत बोला, ''हाँ! कह सकते हो।''

अरुन ने पूछा, ''अभी तुमने कहा तुम्हें मुझे तय समय सीमा के अंदर ले जाना है ना क़ि तय समय पर तो मेरी तय समय सीमा क्या है?''

''अभी रात्रि के 8 बजे है और मुझे तुम्हें 9:36 तक तय जगह पर पहुँचाने का आदेश मिला है, जिसका पालन मुझे हर हालत में करना है।'' यमदूत ने जवाब दिया।

अरुन ने फिर से यमदूत से निवेदन किया, ''मेरे हाथ में जो पैकेट है उसमें किसी का खाना है, जिसके लिए वो पेमेंट भी कर चुका है। अगर मैं रास्ते में ही कहीं गिर गया तो ये पैकेट कभी नहीं पहुँच पाएगा, इसके अंदर का खाना भी वेस्ट हो जाएगा और ये खाने का अपमान होगा। मैंने अपने जीवन में सभी डिलेवरीज टाइम पर डिलिवर की है और मैं चाहता हूँ कि मेरी फ़ाइनल डिलिवरी भी आज टाइम पर ही डिलिवर हो और अभी हमारे पास समय भी हैं।'' ऐसा कहकर उसने यमदूत के सामने अपने दोनों हाथ जोड़ दिए।

यमदूत ने कहा, ''ठीक है फिर चलो, तुम जैसे ही अपनी फ़ाइनल डिलिवरी दोगे, वैसे ही मैं तुम्हें ले जाऊँगा।

''ठीक है'', अरुन ने जवाब दिया।

अरुन अपनी बाइक के थैले में से दूसरा हेलमेट निकालता है और यमदूत को देता है। यमदूत हँस कर कहता है, ''मैं तुम्हारे अलावा किसी को नहीं दिखूंगा तो मुझे हेलमेट की ज़रूरत नहीं है तुम इसे वापिस रख दो।

फिर दोनों बाइक पर बैठ कर अरुन का फ़ाइनल ऑर्डर डिलिवर करने के लिए निकल देते हैं। ''तुम्हारा कुछ नाम भी होता है? और तुम दिखते भी इंसान जैसे ही हो बातें भी इंसानों की तरह ही करते हो।'' अरुन ने बाइक चलाते हुए यमदूत से पूछा। ''हाँ, इंसान की तरह दिखता हूँ क्यूँकि मैं भी कभी इंसान ही था। मेरा नाम ललित था और मैं पलवल का रहने वाला था।'' यमदूत ने जवाब दिया। अरुन ने फिर बड़ी हैरानी के साथ पूछा, ''तो फिर तुम ये यमदूत कैसे बन गये?'' ''मैं जब तुम्हारी उमर का था, मेरी शादी मेरे घरवालों ने मेरी मर्ज़ी के बिना करवा दी थी। उसके बाद से ही मैं रोज़ नशे में धूत रहता था कभी अपनी पत्नी को मारता था तो कभी अपने माता पिता को। मैंने कभी उनका सम्मान नहीं किया। हर समय मैं गुस्से में ही रहता था। एक रात मैंने बहुत ज़्यादा शराब पीली थी, जिससे मेरी तबियत बिगड़ गयी। मेरे घरवाले मुझे हॉस्पिटल लेके गए पर हॉस्पिटल पहुँचते ही मेरी मौत हो गयी। जैसे ही मैं मरने के बाद यमलोक में पहुँचा, तो देखा कि वहाँ पर एक कमिटी बनी हुई है जो हमारे करमों का हिसाब करती है। 4 लोग उस कमिटी में बैठे होते है जिनके सामने हमें खड़ा किया जाता है, बीच में एक तराज़ू रखा रहता है जिसके एक पलड़े में हमारे अच्छे करम ओर दूसरे पलड़े में हमारे बुरे करमों को रख कर तौला जाता है। जब मुझे उस कमिटी के सामने ले जाया गया तो मेरे बुरे करमों वाला पलड़ा ज़्यादा भारी निकला जिसके बाद मुझे उस कमिटी से नरक की सजा सुनाई गयी। मैं बहुत घबरा गया और ज़ोर से रोने लगा। मैंने लाख माफिया माँगी मगर मेरी एक ना सुनी गयी। मेरे शोर को सुनकर वहाँ यमराज आ गये और मेरे पीछे खड़े यमदूतों से कहा कि इसे मेरे कक्ष में लेके आओ।'' ''तुम्हें नरक नहीं जाना, इतना मुझे समझ आ गया है, हालाँकि कमिटी का निर्णय ही सर्वमान्य है पर अगर मैं चाहूँ तो तुम्हें नरक जाने से रोक सकता हूँ। पर इसके बदले में मुझे भी कुछ चाहिए।'' यमराज ने मुझसे कहा।

मैं घबराया हुआ था बस मुझे नरक की आग में नहीं जलना था। मैंने कह दिया, ''आप जो भी कहेंगे, मैं करने के लिए तैयार हूँ।''

''तो ठीक है फिर, तुम्हें मेरा दूत बनना होगा। जिस इंसान का धरती पे समय पूर्ण हो जाएगा, उसकी आत्मा को

तय समय सीमा में यहाँ कमिटी के सामने पेश करना ही तुम्हारा काम होगा। अगर तुम एक बार भी इस काम में असफल होते हो तो तुम्हें मैं ख़ुद नरक के द्वार तक छोड कर आऊँगा।'' यमराज ने मुझसे कहा और मैंने हामी भर दी। इतने में ही एक बड़ा स्पीड ब्रेकर आ जाता है ओर दोनों को ही झटका लगता है।

sorry, sorry, sorry, मेरी गलती थी, मेरा ध्यान तुम्हारी बातों पर था तो मैं देख नहीं पाया अरुन ने कहा।

''कोई बात नहीं'', यमदूत ने जवाब दिया । ''तुम्हारे घर में कौन कौन है ?'' यमदूत ने अरुन से पूछा ।

''मेरे घर में! मेरे घर में मेरे माता पिता मेरी वाइफ़ और दो छोटी बेटियाँ हैं, एक 6 साल की है जिसका नाम पूजा है और दूसरी पिछले महीने ही हमारी ज़िंदगी में आई है उसका नाम हमने रितु रखा है।'' अरुन ने जवाब दिया।

''बधाई हो तुम तो मतलब पिछले महीने ही फिर से पिता बने हो। तुम्हारा कोई भाई भी है?'' यमदूत ने कहा ।

''नहीं, मेरा कोई भाई नहीं है।'' अरुन ने कहा। ''तो इसका मतलब तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारे परिवार का ध्यान रखने वाला कोई नहीं होगा?'' यमदूत ने बहुत ही हैरानी के साथ पूछा । ''नहीं।'' अरुन ने जवाब दिया और फिर दोनों चुप हो गये। ''मुझे बहुत दुःख हुआ ये जानकर पर मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता।'' यमदूत ने निराश होकर अरुन से कहा। ''कोई नही, अब इसमें कर भी क्या सकते हैं जो लिखा है वो तो होना ही है मेरा जीवन इतना ही था।'' ऐसा कह कर अरुन ने अपनी बाइक रोक दी। वो ऐड्रेस पर पहुँच गया था जहाँ उसे फ़ाइनल डिलिवरी देनी थी। वो घर के बाहर गया और बेल बजा दी। गेट एक अंकल ने खोला और अरुन ने उन्हें खाने का पैकेट दे दिया। अंकल ने अरुन को बहुत खुश होकर कहा, धन्यवाद, मेरा पोता बड़ा भूखा था, आपने इस डिलेवरी को टाईम से पहुँचा दिया, मैं आपको पाँच स्टार दूंगा।''

यह देख कर बाहर बाइक पर बैठे यमदूत के चेहरे पर भी मुस्कुराहट आ गई थी पर इसके बाद जो होना था उसे याद करते ही वो मुस्कुराहट निराशा में बदल गयी ।

अरुन यमदूत के सामने आया ओर निराशा भरी आवाज़ में बोला, ''तो ठीक है फिर, मैंने अपनी फ़ाइनल डिलिवरी दे दी है और वादे के मुताबिक़ अब तुम मुझे ले जा सकते हो ।''

यमदूत ने कहा, ''ले जाना ही पड़ेगा, मेरे पास और कोई भी विकल्प नहीं है ।''

इतना कहकर यमदूत ने अरुन के सिर पर अपना दाहिना हाथ रखा और आँखें बंद कर के कुछ धीमी आवाज़ में बोलने लगा। 3 से 4 सेकंड ही हुए थे कि ''रूको'' अरुन ने कहा ।

''क्या हुआ अब, मैं तुमसे कह चुका हूँ कि मुझे तुम्हें ले जाना ही है ।'' यमदूत ने जवाब दिया।

''मेरा घर यहाँ से सिर्फ़ दस मिनट की दूरी पर ही है, मैं चाहता हूँ कि आख़िरी बार मैं अपने परिवार से मिल लूँ। उन्हें ठीक से देख लूँ। जब मैं सुबह घर से निकला था तो अपनी बड़ी बेटी को देख भी नहीं पाया था। मुझे क्या पता था कि मैं आज घर वापिस ही नहीं आ पाऊँगा। अभी 8:35 ही हुए है मतलब अभी भी 9:36 होने में एक घंटा बाक़ी है। मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूँ मुझे बस आख़िरी बार मेरे घर ले चलो, फिर तुम मुझे चाहे तो मेरे घर के बाहर से ही ले जाना।'' अरुन ने बहुत ही दुखी आवाज़ में बोला।

''ये तो तुम मुझे बार बार असमंजस में डाल रहे हो। ठीक है चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे घर के बाहर से ले जाऊँगा। आख़िरी बार तुम अपने परिवार से मिल लो। पर एक सबसे ज़रूरी बात, तुमने समय का ख़्याल रखना होगा, ठीक 9:10 पर तुम घर के बाहर आ जाओगे।'' यमदूत ने थोड़े ऊँचे स्वर में कहा ।

फिर दोनों बाइक पर बैठ कर अरुन के घर के लिए निकल जाते है। क़रीब 8:50 पर अरुन अपने घर पहुँच जाता है और बिना समय बर्बाद किए तुरन्त घर के अंदर चला जाता है। इस बार यमदूत भी उसके साथ अंदर जाता है।

यमदूत जैसे ही घर के अंदर घुसता है, वो देखता है कि अरुन के घर में सिर्फ़ एक कमरा और एक छोटी सी रसोई कमरे के एक तरफ़ उसके माता-पिता बैठे हैं तो दूसरी तरफ़ उसकी 6 साल की बेटी पढ़ाई कर रही है साथ ही साथ वो अपने पास रखे झूले में छोटी बहन को झूला भी रही है। उसकी पत्नी रसोई में खाना बनाने की तैयारी कर रही है।

''पापा आए पापा आए, लाओ आपका बैग मुझे दे दो, मैं रख देती हूँ, ये लो आपका पानी का ग्लास। मैं कब से आपका वेट कर रही थी। आज आप मुझे मेरा होम वर्क करवाओगे।'' पूजा भागी भागी अपने पापा के पास आकर बोली । अरुन की आँखे ये सुनने के बाद आँसुओं से भर चुकी थी, उसकी पलकें अब पूरी तरह से भीग चुकी थी, पलकों से आँसू की बूँदो का टपकना ही बाक़ी रह गया था। शायद उसकी पलकें खुद में आँसुओ को इतना ही सोंख सकती थी। उससे अपनी बेटी को ना कहने की हिम्मत ही नहीं हुई।

''ठीक है बेटे।'' अरुन ने अपना मुँह दूसरी ओर करके जवाब दिया और अपने आँसुओ को जैसे तैसे रोका। फिर वो अपनी छोटी बेटी के पास जाता है और उसे अपनी गोद में उठा लेता है। उसे गोद में उठा कर वो अपने माता पिता के पास जाता है और दोनों के पैर छूता है।

''और बता बेटे, सब ठीक चल रहा है?'' अरुन के पिता ने अरुन से पूछा ।

''हाँ पापा! सब बढ़िया चल रहा है'', अरुन ने जवाब दिया। इतने में उसकी छोटी बेटी रोने लग जाती है शायद भूख की वजह से, उसकी आवाज सुनकर उसकी बीवी रसोई से बाहर आती है। वो पहले घर में सब तरफ़ देखती और कहती है, आ गए आप?, आपको मैंने सुबह ही समान की पर्ची दी थी और कहा भी था कि आते समय याद से ले आना। उसमें रितु का भी ज़रूरी सामान था और देख के लग रहा है कि आप नहीं लाए ।''

''सॉरी, जल्दी में था तो भूल गया।'' अरुन ने जवाब दिया। ''सॉरी की कोई बात नहीं, कल ले आना।'' अरुन की बीवी ने कहा। इन्हीं सब बातों में अरुन को पता ही नहीं चलता है कि 9:10 हो चुके हैं। यमदूत उसे इशारा कर देता है कि अब जाने का समय हो गया है । अरुन अपनी दोनों बेटियों को प्यार देता है, बड़ी बेटी को गले लगा लेता है। ये सब यमदूत की आँखों के सामने ही हो रहा होता है। ''ठीक है, मैं जाकर दूध का पैकेट ले आता हूँ ।'' अरुन ने अपनी बीवी से कहा और कहते हुए बिना पीछे मुड़े वो घर के बाहर आ जाता है। उसके पीछे-पीछे यमदूत भी उसके साथ होता है।

घड़ी में समय 9:15 हो चुके होते हैं। यमदूत और अरुन अब एक दूसरे के सामने आकर खड़े हो जाते हैं। यमदूत एक बार फिर से अरुन के सिर पर हाथ रख कर आँखे बंद करके पहले जैसे ही बोलना शुरू करता है।

''एक सेकंड, मेरे साथ एक आख़िरी सिगरेट पीना चाहोगे ? तुम जानते हो ये मौक़ा फिर कभी नहीं आने वाला। ये मेरी लाइफ़ की आख़िरी सिगरेट होगी। अभी हमारे पास 20 मिनट्स है और वो सामने ही एक चाय की थड़ी भी है। अगर तुम चाहो तो हम साथ में एक आख़िरी सिगरेट पी सकते हैं। प्लीज़!'' अरुन ने उदास होकर कहा ।

यमदूत ये सुनकर सोच में पड़ गया क्यूँकि उससे आजतक किसी ने भी इस तरह की रिक्वेस्ट नहीं की थी, ना यमदूत बनने के पहले और ना बाद में। वो अंदर ही अंदर चाहता भी था के वो हामी भर दे पर उसे यमराज का आदेश भी याद था जिसे उसे हर हाल में पूरा करना था।

पर अरुन के साथ उसका अब तक का सफ़र जैसा रहा था वो उसे चाह कर भी ना नहीं कह पाया। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट आ गयी।

''ठीक है तुम्हारी ये बात भी मान ली चलो।'' यमदूत ने कहा। दोनों सामने की थड़ी पर जाकर मुड्डे के ऊपर बैठ जाते हैं। अरुन एक सिगरेट ले आता है और उसे माचिस से जला लेता है।

पहला कश लेने के बाद वो यमदूत से कहता है, ''तुम्हें क्या लगता है कि कमिटी मुझे कहाँ भेजेगी, स्वर्ग में या नरक में?'' और कह कर वो सिगरेट को यमदूत को पास

कर देता है। यमदूत सिगरेट को पकड़ कर वो भी कश लेके कहता है, ''तुम स्वर्ग में जाओगे। जो अपने माता और पिता की सेवा करता है अपने परिवार का ख्याल रखता है अपने काम को पूरी ईमानदारी के साथ करता है उसे स्वर्ग ही मिलता है ।'' कह कर उसने सिगरेट अरुन को पास कर दी । ''ऊपर क्या ये ऑप्शन मिलता है कि स्वर्ग की जगह मैं वापिस अपने परिवार के पास आ जाऊँ, क्यूँकि मैं अपने परिवार को इस हालत में देख कर स्वर्ग में तो क्या, कहीं भी चैन से नहीं रह पाऊँगा । क्या ही होगा मेरी दोनों बेटियों का, सोच के ही डर लग रहा है'', अरुन ने कश को मुँह से छोड़ते हुए कहा ।

आगे उसने कहा, ''तुम नरक में इसीलिए गये क्यूँकि तुमने जीते जी अपने माता पिता की सेवा नहीं की परिवार का ख्याल नहीं रखा, पर मैं तो जीते जी रखना चाहता हूँ। मेरे लिए तो मेरा ये छोटा सा घर ही स्वर्ग है क्यूँकि इसमें मैं अपने परिवार के साथ रहता हूँ।''

एक आख़िरी कश बचा था जो उसने यमदूत की तरफ़ पास करने के लिए जैसे ही अपना हाथ बढ़ाया तो देखा कि यमदूत उसके बग़ल से उठ कर चला गया है। अरुन ने टाइम देखा तो 9:33 हो चुके थे। सिर्फ़ 3 मिनट्स ही बाक़ी रह गए थे। उसने सिगरेट नीचे फेंक दी, वो उठा और धीमे कदमों से यमदूत के पास पहुँच कर अपना सिर झुका के खड़ा हो गया।

दोनों एक दम चुप खड़े थे। अरुन की आँखो से अब आंसू बहने लगे थे। उसने ऊपर आसमान की तरफ़ देखा और रोते हुए कहा, ''हे भगवान, मेरे जाने के बाद मेरे परिवार का ध्यान रखना।''

फिर यमदूत की और देख कर अपने दोनों हाथ जोड़ कर कहा, ''ठीक है ललित भाई, तुम्हारा मैं तहे दिल से धन्यवाद करता हूँ तुमने मुझे मेरी फ़ाइनल डिलिवरी करने दी, मुझे मेरे परिवार से आख़िरी बार मिलने का मौक़ा दिया, मैं हमेशा तुम्हारा शुक्रगुज़ार रहूँगा।'' अरुन रोता ही जा रहा था। 9 बजकर 35 मिनट हो चुके थे। सिर्फ़ एक मिनट ही बाक़ी रह गया था। अब किसी भी वक्त अरुन को यमदूत ले जा सकता था।

यमदूत ने एक बार फिर अपना हाथ अरुन के सिर पर रखा। अरुन सिसक सिसक कर रोए ही जा रहा था। उसने अपनी आँखे बंद कर रखी थी । यमदूत ने अपनी आँखे बंद कर मंत्रों का उच्चारण शुरू कर दिया।

9:36 अरुन अपनी आँखे खोलता है तो वो देखता है कि वो अभी भी वही खड़ा है पर अब उसके सामने यमदूत नहीं है। वो तुरंत अपनी घड़ी देखता है उसमें 9 बजकर 36 मिनट ओर 30 सेकंड्‌ हो चुके होते है। घड़ी देख कर वो सब समझ जाता है, फिर वो ऊपर की ओर देखता है और सोच में पड़ जाता है कि अब यमदूत को नरक में जाना पड़ेगा। यमराज के कक्ष का दरवाज़ा खुलता है, दो यमदूत ललित को यमराज के पास लेके आते हैं। ललित अपना सिर झुका के प्रणाम करता है और खड़ा हो जाता है। यमराज अपने सिंहासन पर विराजमान हैं। वो ललित से कहते हैं, ''तुम अरुन से पहले 29 आत्माओं को तय समय पर यहाँ लाये थे, तुम तो नरक में जाने से इतना डरते थे फिर ऐसा तुमने उस इंसान में क्या देखा कि तुमने उसको यहाँ ले आने की जगह नरक में जाना चुना ।

''कुछ भी नहीं महाराज! वो भी दूसरे इंसानों की तरह ही था।'' ललित ने उत्तर दिया। यमराज ने फिर पूछा, ''तो फिर तुम उसे क्यूँ नहीं लाए, जबकि तुम्हें पता था कि इसकी सजा में तुम्हें अब नरक जाना पड़ेगा।'' ''महाराज! मैं उसे लेके आने ही वाला था, इसे लेकर मेरे मन में कोई संशय नहीं था परंतु आख़िर में जो उसने बात कही वो मेरे अंदर घर कर गयी'', ललित ने जवाब दिया । ''ऐसा उसने क्या कहा?'' यमराज ने उत्सुकता के साथ पूछा।

''महाराज, उसने मुझसे कहा कि उसका स्वर्ग वही है जहां उसका परिवार है। अगर वो स्वर्ग में चला भी गया तो भी चैन से नहीं रह पाएगा क्यूँकि उसका परिवार उसके साथ नहीं होगा । मैं नरक से पता नही क्यूँ इतना डर रहा था, जबकि मैं अपनी नरक ज़िंदगी से तो आया ही था। ना मैंने

अपने परिवार के लिए कुछ किया, ना अपने समाज के लिए और ना खुद के लिए। बस नशे को ही अपनी ज़िंदगी समझ लिया था। असली स्वर्ग और नरक यहाँ परलोक में नहीं है महाराज, नीचे धरती पर है, जिसे परिवार कहते हैं। इससे बड़ा कोई स्वर्ग नहीं । जब मैं अरुन के घर में गया था, घर में इतनी ग़रीबी होने के बावजूद भी एक चीज़ की कमी बिल्कुल भी नहीं थी, उस परिवार का आपस में प्यार। उस परिवार को आप खाना मत दो चलेगा, पर उनमें से किसी को अलग कर देना, ये मुझे मेरे नरक जाने से भी बदतर लगा। मैंने अपने जीते जी किसी के लिए भी कुछ नहीं किया था पर जब मुझे ये मौक़ा मिला तो मैं इस मौक़े को कैसे जाने देता महाराज। मुझे मेरे किए पर ज़रा सा भी पछतावा नहीं है ।'' ललित ने इतना कह कर अपना सिर नीचे कर लिया। ''तुम जानते हो कि हमारे काम में भावनाओं की जगह बिल्कुल भी नहीं है। मैंने तुमसे उस समय ही कहा था, अगर तुम इस काम में एक बार भी असफल हुए तो मैं स्वयं तुम्हारी आत्मा को नरक में छोड़कर आऊँगा, अब तुम नरक में चलने के लिए तैयार हो जाओ।'' ऐसा कहकर यमराज ने ललित का हाथ पकड़ा और उसे नरक में घसीट कर ले जाने लगे। ललित ने अपना सिर झुका ही रखा था।

पर ये क्या, यमराज ने उसे थोड़े ही दूर तक घसीटा होगा कि उन्होंने देखा कि वो उसे खींच ही नहीं पा रहे हैं। उन्होंने और ज़्यादा ज़ोर लगाया, पर ज़्यादा ज़ोर लगाने की ललित के नीचे की ज़मीन टूट गयी पर ललित तस से जस भी हो पाया।

इतने में ऊपर से एक रोशनी आती है और ललित की आत्मा अपने आप धीरे धीरे उस रोशनी की तरफ़ बढ़ने लग जाती है।

''बड़ा त्याग था!'', यमराज ने बहुत हैरानी के साथ बोला। क्यूँकि वो रोशनी स्वर्ग की थी। उसके निस्वार्थ त्याग को देख कर उसे स्वर्ग ने अपना लिया था। पर यमराज को यह देख कर गुस्सा आ गया और उन्होंने चिल्ला कर कहा, ''नहीं! नहीं! नही!, ऐसा कभी नहीं हो सकता, तुम मुझे इस तरह से बेवक़ूफ़ नहीं बना सकते, तुम्हारी आत्मा सिर्फ़ मेरी है मेरी, मैं तुम्हें इस तरह से अपने पास से नहीं जाने दूँगा । और उन्होंने अत्यधिक क्रोध में ललित के छाती के अंदर हाथ डाला और उसका दिल ज़ोर से पकड़ कर फिर से ज़िंदा कर दिया।

मैं तुम्हें फिर से ज़िंदा करके धरती पर भेज रहा हूँ जिससे तुम फिर से बुरे करम करोगे और इस बार मैं तुम्हें ख़ुद धरती से लेके नरक में छोड़ कर आऊँगा। किसी भी हालत में तुम्हें स्वर्ग में नहीं जाने दूँगा।, यमराज ने गूंजती हुई आवाज़ में कहा। ललित की आँखे खुलती है ओर वो देखता है कि वो हॉस्पिटल में लेटा हुआ है, उसके एक तरफ़ उसके माता पिता तो दूसरी तरफ़ उसकी बीवी खड़ी होती है। उसे लगता है वो शायद ये सब सपना देख रहा था और वो लम्बी साँस छोड़ता है और फिर से अपनी आँखे बंद कर लेता है।

तभी सामने से डॉक्टर कमरे के अंदर आता है, जिसे देख कर ललित डर जाता है । क्यूँकि वो इंसान डॉक्टर के भेस में यमराज होता है। वो ललित के पास आकर उसके कान में कहता है, ''जितना जीना है जी ले, एक दिन तुझे यहाँ से लेके मैं ही जाऊँगा। शराब, सिगरेट और सभी नशे के दूसरे समान मेरे अस्त्र है जिनसे बच पाना धरती पर बहुत मुश्किल है। बड़े बड़े मेरे इस अस्त्रों के जाल में फँसते चले जाते हैं। तू फिर से फँसेगा। तैयार रहना मैं जल्दी लेने आऊँगा।'' इतना कह कर डॉक्टर वहाँ से चला जाता है।

फिर ललित धीरे धीरे खड़ा होता हैं और सबसे पहले अपने माता पिता के पैर छूता है । फिर अपने पूरे परिवार से वो दोनों हाथ जोड़कर माफ़ी माँगता है और ज़ोर ज़ोर से रोने लग जाता है। उसके माता पिता उसे गले लगा लेते हैं।

दो सप्ताह बाद

ललित अपने घर के बाहर कुर्सी पर बैठा होता है। सोचते सोचते उसे अरुन की याद आ जाती है और उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती है। वो सोचता है,

''उस रात फाईनल डिलेवरी अरुन की नहीं,
हक़ीक़त में मेरी थी ।''

सहायक, जीएसआई,पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर

लोग क्या कहेंगे
(WHAT WILL PEOPLE COMMENT)

सीए. जयन्त गुप्ता

प्रायः हम जब भी कोई नया काम शुरू करते हैं या किसी काम को करने की नई विधि निकालते हैं तो उनके मन में यह भय बना रहता है कि मेरे दोस्त, परिवार के लोग क्या कहेंगे ? और लगभग 19-20 वर्ष की अवस्था के बाद तो यह धारणा और अधिक बलवती होती जाती है। दुनिया क्या सोचेगी ? इस भय के कारण वे या तो उस काम को चुपचाप बिना किसी को भनक लगे करने की कोशिश करते हैं या उस काम को करते ही नहीं । इस संबंध में गधे वाली कहानी तो आपने सुनी ही होगी ।

एक बार एक पिता-पुत्र पैदल जा रहे थे। उनके साथ एक गधा भी था। जब वे एक गांव में से होकर जा रहे थे तो वहाँ के लोगों ने कहा, देखो! कितने बेवकूफ हैं, सीधी सवारी साथ है और दोनों बाप-बेटे पैदल जा रहे हैं। ऐसा सुनकर दोनों उस गधे पर बैठ गए। जब वे दूसरे गांव में से होकर निकले तो गांव वालों ने कहा कि शर्म ही नहीं आती । बेचारे एक गधे के ऊपर दोनों एक साथ बैठ गए। इस बेचारे जीव की भी कोई सीमा है । ऐसा सुनने पर बेटा उतर गया, उसका पिता गधे पर बैठा रहा और उन्होंने तीसरे गांव में प्रवेश किया। वहां लोग उनको देखकर कहने लगे कि बाप में बिल्कुल भी अक्ल नहीं है, बेचारा बेटा तो पैदल चल रहा है, बाप गधे पर मजे से बैठा हुआ है। ऐसा सुनने पर बेटा गधे पर बैठ गया व उसका पिता पैदल चलने लगा। उन्होंने चौथे गांव में प्रवेश किया। वहाँ प्रवेश करने पर गांव वाले कहने लगे कि कैसा बदतमीज बेटा है, पिता को तो पैदल चलवा रहा है। खुद गधे पर बैठा हुआ है ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी भी प्रकार से कार्य करने पर आपके आसपास के लोगों में कुछ एक व्यक्ति तो आपसे सहमत होंगे किन्तु उससे असहमत रहने वाले लोग आपकी टांग खीचेंगे, आपकी निन्दा करेंगे अथवा और कुछ न कर सकें तो अपनी राय देना शुरू कर देंगे । अतः हमें स्वयं को अपने आप में देखना चाहिए कि हम जो भी कर रहे हैं, वह सही है अथवा नहीं। इसके बाद लोग जो भी कहें, उसकी परवाह नहीं करना चाहिए लेकिन ऐसा भी नहीं करना चाहिए कि हम गलत काम करें तथा लोगों के टोकने पर हम उनकी परवाह ही नहीं करें। ऐसी सोच तो हमें और अधोगामी मार्ग की ओर ले जाती है ।

वैसे एक बात यह भी है कि लोग हमारे बारे में ज्यादा नहीं सोचते अपितु हम खुद ही यह सोचकर परेशान होते रहते हैं कि लोग हमारे बारे में क्या सोच रहे होंगे ? मान लो कि रास्ते में एक साधु जा रहा है । आप उसके बारे में कितना सोचते हैं ? केवल मात्र उसे देखकर चल देते हैं । वहीं दूसरी ओर, यदि हमें साधु की वेशभूषा पहना दी जाए तो हम यह सोच-सोचकर कि ‘लोग क्या सोच रहे होंगे’, आत्मग्लानि महसूस करने लगते हैं जबकि लोगों ने तो हमारे बारे में भी उतना ही सोचा जितना कि हमने उस साधु के बारे में सोचा ।

अतः युवा विद्यार्थियों को कोई भी परंपरा से हटकर अलग काम करने में संकोच नहीं करना चाहिए यथा रास्ते में पढ़ाई करना, बस में, लंच के समय पढ़ाई करना, कक्षा में कोई प्रश्न पूछना, गलत बातों के खिलाफ आवाज उठाना आदि। बल्कि हमें तो यह करना चाहिए कि किसी कार्य को करने की परंपरा हो या न हो, बिल्कुल खुले दिमाग से सोचें जो ठीक लगे वो करें, दूसरों की सुनें, राय लें। यदि तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर लगता है कि अगले की बात में दम है तब तो ठीक है, अन्यथा तुरंत उसे अस्वीकार कर दें। अपनी आत्मा का सहारा लेना चाहिए। एक बार जो सोच लिया कि यह काम सही है तो उसको करने में हिचकिचाना नहीं चाहिए तथा बार-बार नहीं सोचना चाहिए । फिर चाहे लोग कितना ही विरोध करें, उससे विचलित नहीं होना चाहिए। हमें बस अपने प्रति ईमानदार रहकर काम करना है। फिर चाहे लोग कुछ भी कहें, हमें कोई मतलब नहीं होना चाहिए। कहा भी गया है सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग ।

जी.एस.आई.,
जयपुर

क्षणिक

मेघराज मीना

1. क्षणिक नहीं कोई आरम्भ,
क्षणिक नहीं कोई अंत,

कल का एक मामूली बीज,
आज है एक छायादार वृक्ष फलयुक्त,
कोई है उज्जवल दिन,
या कोई घनघोर रात भययुक्त,

क्षणिक नहीं कोई आरम्भ,
क्षणिक नहीं कोई अंत,

क्षणिक सिर्फ सुख,
बाकी जीवन है संघर्ष का रंगमंच,

यह तो है केवल इच्छाशक्ति का परिणाम,
जो बन सके तो कोई व्यक्ति महान,

क्षणिक नहीं कोई आरम्भ,
क्षणिक नहीं कोई अंत,

अवर श्रेणी लिपिक
कार्यालय कार्यपालक अभियंता - अजमेर
के. लो.नि.वि., अजमेर

पुष्कर मेले में केंद्रीय संचार ब्यूरो की अत्याधुनिक मल्टीमीडिया प्रदर्शनी : एक अभिनव पहल

पराग मांदले

आज का युग सूचना का युग है। इस युग में विभिन्न संचार माध्यमों से बड़ी संख्या में सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा रहा है। केंद्र सरकार के विभिन्न विभाग भी समाचारपत्र-पत्रिकाओं, टीवी, रेडियो, सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से सरकार से जुड़ी विभिन्न सूचनाओं का प्रचार-प्रसार करते हैं। मगर इन सबमें सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत केंद्रीय संचार ब्यूरो की एक अलहदा और महत्वपूर्ण भूमिका है। यह केंद्र सरकार का एकमात्र ऐसा विभाग है जो लोगों के बीच पहुँचकर उनके साथ प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी पहुँचाने का काम करता है। इसके अलावा विभिन्न सामाजिक और राष्ट्रीय महत्व के विषयों और मुद्दों पर जनजागरण का कार्य भी इस विभाग द्वारा किया जाता है। इसके लिए केंद्रीय संचार ब्यूरो समाज के विभिन्न वर्गों के बीच व्याख्यान, सेमिनार, कार्यशाला, प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम और विशेष प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन करता है। आमतौर पर इस तरह के कार्यक्रमों का एक निश्चित टारगेट ग्रुप होता है।

केंद्रीय संचार ब्यूरो लोगों तक पहुँचने और उन तक विभिन्न जानकारियां पहुँचाने के लिए कई प्रकारों के नवाचारों का उपयोग करता है। इसी तरह का एक प्रयोग केंद्रीय संचार ब्यूरो द्वारा अजमेर जिले में हर वर्ष आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर मेले के दौरान भी किया गया। सब जानते हैं कि पुष्कर मेला राजस्थान के उन चुनिंदा आयोजनों में एक है, जिसकी पूरे वर्ष प्रतिक्षा की जाती है और जिसमें न सिर्फ पूरे देश से, अपितु विदेशों से भी बड़ी संख्या में पर्यटक और संस्कृति प्रेमी शामिल होते हैं। दस दिन चलने वाले इस मेले में राजस्थान की पारम्परिक लोककलाओं के प्रदर्शन के साथ-साथ कई प्रकार की खेल व अन्य प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनियों आदि का आयोजन होता है। वर्ष में 2022 में यह मेला दिनांक 01 से 10 नवंबर के दौरान आयोजित किया गया। यूँ तो इस मेले की शुरुआत पशु मेले से होती है। मगर इस वर्ष लम्पी रोग के प्रादुर्भाव के कारण पशुमेले का आयोजन नहीं किया गया।

केंद्रीय संचार ब्यूरो द्वारा इस मेले में एक विशाल मल्टीमीडिया प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। अमृतयात्रा, इंडिया2047 शीर्षक से आयोजित इस प्रदर्शनी में भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी जानकारियों के साथ-साथ केंद्र सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी पोस्टर और एलईडी टीवी के माध्यम से प्रदर्शित की गई थी। इनमें एक भारत श्रेष्ठ भारत, महिला सशक्तिकरण, आयुष्मान भारत, भारतीय जनऔषधि परियोजना, स्वच्छ भारत मिशन, फिट इंडिया, अग्निपथ योजना, किसानों से सम्बन्धित योजनाएं, पोषण और मिशन इंद्रधनुष योजना, गतिशक्ति योजना, नयी शिक्षा नीति सहित केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का समावेश था।

इस प्रदर्शनी में भविष्य के अत्याधुनिक शक्तिसम्पन्न भारत की एक झलक दिखाने के उद्देश्य से कई प्रकार की

नयी तकनीक और प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया गया था। इसमें विशाल एलईडी स्क्रीन के साथ–साथ 360 डिग्री वीडियो, मोशन गेम्स, ऑनलाइन क्विज, सेल्फीविद पीएम जैसे अनेक तकनीकी नवाचारों को शामिल किया गया था। प्रदर्शनी का एक बड़ा आकर्षण आर्टिफिशियल इंटलीजेंस के माध्यम से दर्शकों को दिल्ली के कर्तव्य पथ का लाइव दर्शन कराना था, जिसमें दर्शक विभिन्न एंगलों से कर्तव्य पथ पर चलते हुए चारों ओर देखने का आनंद पुष्कर मेले में ही उठा रहे थे। सामान्यतः कार्यालय समय में चलने वाली प्रदर्शनी को पुष्कर मेले में दर्शकों की भारी भीड़ के कारण सुबह 9 बजे से रात को 10 बजे तक शुरू रखा गया था। इसके बावजूद देर रात तक लोगों की भीड़ कम होने का नाम नहीं ले रही थी।

यह पहली बार हुआ था कि पारम्परिक कलाओं, परम्पराओं, धार्मिक आयोजनों और खानपान के साथ–साथ मेले में आने वाले दर्शकों को अत्याधुनिक तकनीकों के माध्यम से सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी मिल रही थी। इसके कारण उनका उत्साह देखे जाने लायक था।

पाँच दिनों की प्रदर्शनी की अवधि में करीब पचास हजार से ज्यादा दर्शकों ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया। यह अनुभव निश्चित रूप से आयोजकों का उत्साह बढ़ाने वाला भी था। सैंकड़ों सालों से आयोजित होने वाले पारम्परिक मेलों में लोगों से जुड़कर उनके लिए उपयोगी जानकारी को नयी तकनीक के माध्यम से पहुंचाने का यह प्रयोग अत्यंत सफल रहा था।

क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी
केन्द्रीय संचार ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर

घृणा : कोरोना में पलायन

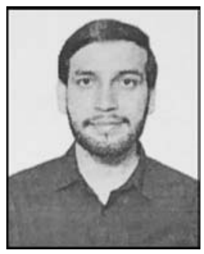

अभिनन्दन

हम उम्मीद के सहारे चले
कोई हमारे साथ ना था
सड़कों पर चलते चले गए
मीलों मील

रास्तों में फूट फूटकर रोये
और हमारे साथ रोये
पाँव के छाले
फूट-फूटकर

यूँ तो
घृणा कोई बहुत अच्छी चीज़ नहीं है
परंतु वह इतनी बुरी भी नहीं कि
जहाँ आवश्यक हो वहाँ भी
न की जा सके।

(परिवार सदस्य भाई)
पी.एच.डी. हिंदी छात्र
दिल्ली विश्वविद्यालय

कोरोना से युद्ध व पुनर्निर्माण तक

सतीश देपाल

वो आसमानों में रहने वाला, सुनेगा इक दिन तेरी भी, हे मानव,
आज दुनिया में कोरोना वायरस का कोहराम मचा है,
साँस घुटती जा रही है खुद हवा की ..!

बादलों के साए से फिर ये दिल धड़कता
संकट की घड़ी में सबकी है परीक्षा
एक बार फिर दुनिया में छा गया है घनघोर अंधेरा ...!

अपने को एक-दूसरे से दूर-दूर रखकर
घरों में ही बन्द रहकर मानवता का है फर्ज निभाना...।

हौसला रखना ..
एक दिन हवाओं में फिर अमृत घुल जाएगा,
आज तुम्हें कोरोना ने है ललकारा ...
आज तुम लड़ना ...
कल के मानव इतिहास की निरंतरता के लिये .. !

इतिहास भी याद रखेगा तुम्हारे इस युद्ध के शंखनाद को.. !
सम्पूर्ण राष्ट्र कर रहा है सलाम..
चिकित्सा व आपातकालीन सेवाओं के योद्धाओं के जज्बों को.. !
याद रखना कोरोना खुद ही हार जाएगा तेरे इस आव्हान से .!

मुस्कराहट साथ न छोड़े...
सदा को अपनी बुलंद रखना तू,
दुआ में जब तक असर न आए......
एक दिन हम आगे निकल तो जाएंगे, रात के घनघोर अँधेरों से.....
रोशनी एक दिन मिलेगी नये सवेरों से.....

फिर कोई पुकारेगा खेत की मुँडेरों से ......
प्यार की नई बस्ती फिर तुझे बसानी है....
एक दिन दूर तुम्हें निकलना है नफ़रतों के घेरों से...

कौन है जो समझेगा सीढ़ियों की धड़कन को...
काँपती हैं देखो तो रात के अँधेरों से....

किस ने रोक रखा है मुस्कराती किरणों को
शोर ये उठा कैसे ज़ुल्मलों के डेरों से....

एक दिन फिर तुम आज़ाद हो जाओगे
तुम फिर मुस्कराओगे,
चारों और फिर छा जाएगी खुशहाली ...!

उप महानिदेशक एवं केन्द्राध्यक्ष
दूरदर्शन केन्द्र,
झालाना डूंगरी, जयपुर

मम्मी, मैं शिक्षक बन जाऊँ

डॉ. अरविन्द शर्मा

अंग्रेजी बचपन से आती,
गणित मुझको नहीं थकाती,
हिंदी मेरा प्रिय विषय है,
मन से इसे पढ़ाऊँ,
मम्मी, मैं शिक्षक बन जाऊँ !

नैतिक मूल्यों की शिक्षा दूँगा,
देश भक्ति की दीक्षा दूँगा,
बच्चे मेरे सब कुछ होंगे,
शपथ यही दोहराऊँ,
मम्मी, मैं शिक्षक बन जाऊँ !

बच्चे रोशन नाम करेंगे,
नहीं किसी से वे डरेंगे,
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
सबको साथ बैठाऊँ
मम्मी, मैं शिक्षक बन जाऊँ !

स्वच्छता का पाठ पढाऊँ,
कहानी किस्से खूब सुनाऊँ,
बच्चों से कुछ नया करा कर,
जग में नाम कमाऊँ,
मम्मी, मैं शिक्षक बन जाऊँ !
मम्मी, मैं शिक्षक बन जाऊँ !!

प्र. स्नातक शिक्षक हिंदी
के.वि.क्र.3, जयपुर

उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो

श्रीमती सरिता जानू

उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो
जगत की उत्पत्ति का आधार हो तुम
प्रेम और वात्सल्य का आगार हो तुम
गागर में सागर हो तुम
फिर कैसे कमजोर हो तुम...

संगीत में साज हो तुम
घर-घर में लाज हो तुम
घर में सरताज हो तुम
फिर कैसे कमजोर हो तुम...

पति की सावित्री हो तुम
हरि की लक्ष्मी हो तुम
घर-घर की तुलसी हो तुम
फिर कैसे कमजोर हो तुम...

हर व्याधि की औषध हो तुम
हर घर की बरकत हो तुम
मातृत्व का आधार हो तुम
फिर कैसे कमजोर हो तुम...

सुख-समृद्धि का वास हो तुम
रिद्धि-सिद्धि के साथ हो तुम
प्रसिद्धि का निवास हो तुम
फिर कैसे कमजोर हो तुम...

किसी की परछाई नहीं हो तुम
किसी का पर्याय नहीं हो तुम
भक्ति हो तुम, शक्ति हो तुम
फिर कैसे कमजोर हो तुम...

उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो

प्र. स्ना. शिक्षिका, संस्कृत, के.वि.क्र.3, जयपुर

शिक्षक हूँ मैं, तेरी परवाह करता हूँ...

सुनील दत्त शर्मा

विद्यालय के मुख्य द्वार से,
तेरे कक्षा कक्ष तक,
तुझे शून्य से उठा, दूर तेरे लक्ष्य तक,
सुबह-शाम, दिन-रात, हर वक्त,
तेरे हर कदम, तेरी हर चाल की,
संभाल करता हूँ
शिक्षक हूँ मैं, तेरी परवाह करता हूँ

1. तेरी खुशियों में खुश, तेरे गम में उदास,
तेरे टूट्ते मनोबल में, हर वक्त तेरे पास,
ज्ञान की समझ, और स्वयं पर विश्वास,
तेरी हर सांस में फूँक-फूँक भरता हूँ,
शिक्षक हूँ मैं, तेरी परवाह करता हूँ

2. तेज चल, ज़रा रुक, हो खड़ा, न झुक,
क्या सही, क्या गलत, क्या मिथ्या, क्या सतत,
खींच कर लगाम, हर बार, अनवरत,
जीवन के हर मोड़ पर, तुझे आगाह करता हूँ,
शिक्षक हूँ मैं, तेरी परवाह करता हूँ

3. कभी रिमझिम फुहार सा, कभी बिजली सा चमक,
कभी मौसम बहार सा, कभी बादल सा गरज,
हर शब्द, हर बोल, औषधि सा तौल-तौल,
तेरी, केवल तेरी सफलता की चाह करता हूँ,
शिक्षक हूँ मैं, तेरी परवाह करता हूँ

शिक्षक (अंग्रेजी भाषा)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक तीन, जयपुर

अंधकार से जीवन ?

अजय सिंह तोमर

रात्रि-अंत, मात्र प्रतीक्षा करने से नहीं,
प्रकाशमय पहर के हो जाने से होता है,

यात्रा-सार्थक, पथ-माप करने से नहीं,
निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति कर लेने से होता है,

स्वप्न-सच, निद्रा ग्रहण करने से नहीं,
परिश्रम, दूरदर्शी व संघर्ष करने से होता है,

अजय-तिलक, विजय प्राप्ति करने से नहीं,
पराजय उपरांत प्रयासरत होने से होता है,

उज्जवल भविष्य, मात्र कल्पना करने से नहीं,
भूत से वर्तमान का विकास करने से होता है,

वृद्ध-मनुष्य, आयु प्राप्त करने से नहीं,
सोच को नवीनतम ना करने से होता है,

वास्तविक सुख, सांसारिक कर्म करने से नहीं,
निरर्थकता से सार्थकता की ओर जाने से होता है,

जीवन परिभाषा, मात्र व्यतीत करने से नहीं,
अनुभव से जीवनार्थ ज्ञात कर लेने से होता है,

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कार्यालय मुख्य अभियंता
के.लो.नि.वि., जयपुर।

दृष्टि-दोष

तुंग नाथ त्रिपाठी

सघन, अचल, कालिमामुक्त, दुर्गम को सुगम बनाती,
दूर क्षितिज को छूती सी, काली पथ के उस पार,
खडी अचम्भित देख रही, एकाग्रचित होकर किसको ?

है अडिग नहीं है पास कोई थक जाती सबकी नजरें,
उस सुदूर वट के तट तक, चींटी सा जो दिखता है,
है एकदम सुनसान, दीखता नहीं कोई पक्षी भी,
हल्की सी मुस्कान लिए होठों पर, भ्रमरित आँखों से,
अनार के सोलह दानों को, कुन्दरूँ के ऊपर रखे,
दो लटें रेशमी बालों की, रेंगती हुई गालों पर,
अपलक, मग्न देख रही, एकाग्रचित होकर किसको ?

रक्तमय आसमान है, स्थित सा बिल्कुल शान्त,
अरुणिमा आभामय हो गई, प्रकृति है क्लान्त,
तरह-तरह आकृति लिए, नभ में बादल हैं खेल रहे,
भालू बन्दर, हाथी, राक्षस, मानव सा रूप बिखेर रहे,
उत्तर-पूरब के कोने में, इन्द्रधनुष चौथाई है,
हो सके नहीं पूरा शायद क्योंकि अभाव घन का है,
आँसू टप टप टपके, पलकें नहीं झपकतीं,
संशय दिल से देख रहीं, एकाग्रचित होकर किसको ?

छाया प्रतिछाया लम्बी हो अदृश हो रही,
साड़ी धवल बन रक्तमय, दिखती रंग बदलती,
चमक दमक आँखों की मौलिकता नष्ट हो रही,
आशा नहीं आगमन के आज निशाकर की,
नक्त अमावस्या के बाद चांद आज पहली सीढी पर,
कौन दिलाये याद निकट पहुँच पगली के,
बरबाद लुटी सी देख रहीं, एकाग्रचित होकर किसको ?

एक एक करके क्रमश: प्रस्थान कर गये,
दिनकर चार प्रहर बीते कल फिर आएंगे,
यह क्या? अद्भुत खेल ! यहाँ सुनसान रात्रि में,
बदला कैसा वेश? कान्ति दिन से भी ज्यादा,
शुभ्र, धवल ज्यादा कपूर से भी दिखती हो,
है नहीं कोई बदलाव अपितु यह रंग प्रकृति का,
मानव दृग का था दोष अक्षि ने धोखा खाई,
कर दो देवि! माफ नहीं भूलूंगा तुझको,
करूं नमन मैं शत् शत् शत् ! एकाग्रचित होकर तुझको ?

वरिष्ठ कार्यकारी (प्रशासन)
खादी और ग्रामोद्योग आयोग,
रा.का., जयपुर

बचपन की यादें

योगिता शर्मा

चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं ।
उन्हीं मीठी-मीठी मासूम, यादों में खो जाते हैं
बचपन की यादों का पिटारा खोल लाते हैं
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं ।

वो शर्माते हुए अपना परिचय बताना
और जाके माँ के पीछे छुप जाना
वो लम्हें मन को गुदगुदाते हैं
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं ।

दो रूपये में ढेर सारी चीजें खरीद कर लाना
उसमें से भी कुछ पैसे वापस बचाना
चूर्ण की गोली, सुपारी, बेर, बर्फ का गोला
और ऑरेंज टॉफी का खट्टा मीठा स्वाद हमें बुलाते हैं।
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं ।

छुपन-छुपाई, पहल-दूल, चेन-तोड, कंचे और गिल्ली-डंडा,
अक्कड-बक्कड, खो-खो, कबड्डी, सितौलिया और रूमाल झपट्टा ।
ये सब खेल खेलने को अब हम क्यों तरस जाते हैं
तो क्यू न चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं।

वो स्कूल में टिफिन खुलते ही
परांठे व आचार की खुशबू का हवा में घुल जाना
और दोस्तों के टिफिन में से खाना
फिर से हमें बुलाते हैं, तो क्युं न
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं ।

आज भी स्कूल के सामने से गुजरते हुए मन का ठहर जाना

और छुट्टियों में नानी के जाके वो अपने भाई-बहनों से मिलकर त्यौहार सा मनाना
गुड्डे-गुडिया की शादी में सचमुच में घुल जाते है
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं।

स्कूल के दोस्तों का साथ में स्कूल जाना व आना
एक दूजे के लिए घरवालों से बहाने बनाना
वही निस्वार्थ मासूम दोस्ती फिर से चाहते हैं
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं।

वो स्कूल में टीचर की डांट में छिपा दुलार
वो कागज की नाव और स्कूल का मैदान
और वो दोस्तों की टोली और उनका प्यार फिर से हमें बुलाते हैं
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं।

वो पापा मम्मी के साथ मेले व सर्कस देखने जाना,
मेले में जाके चाट खाके, खिलौने पर रूस जाना
अब बड़े होकर किससे फरमाइश करें, यही समझ ना पाते हैं
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते है।

बचपन में झूले पर बैठ कर खुश होकर इतराना
और बड़े होकर झूले पर बैठने में शर्माना
क्यों हम जानते बुझते बडप्पन में जिन्दगी झोंक आते है
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं।

माँ-पिता से जो चाहे मंगवाना
और उनका खुद के लिए ना लेकर, सब कुछ हमको दिलाना
ये सब त्याग बड़े होकर क्यों भूल जाते हैं
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं।

जल्दी बड़े होने की होड़ में, बचपन भूल जाते हैं
और जो बचपन भूल जाते हैं
वे वक्त से पहले बूढे हो जाते हैं।
चलो एक बार फिर से बच्चे बन जाते हैं।

एल.डी.सी.
आयकर अपीलीय अधिकरण, जयपुर न्यायपीठ, जयपुर

ये मेरी रेल की कहानी है

चन्द्र प्रकाश प्रजापत

ये मेरी रेल की कहानी है।
कुछ कही कुछ अनकही ;
कुछ सुनी कुछ सुनाई,
ये मेरी रेल की कहानी है।
ये मेरे देश की कहानी है,
ये मेरी रेल की कहानी है
भाप की रेल से बुलेट रेल तक,
बस इतनी सी कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है ।

छोटे से गांव से महानगर तक,
पहुंचने की कहानी है।

अंग्रेजी राज से जनता के राज तक,
आजाद हिन्दुस्तान की कहानी है।
ये देश सेवा की कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है

ये रेल सेवकों की कहानी है।
ये मेरे देश भक्तों की कहानी है ।
कई कहानियों से बनी मेरी कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है।

रही है ये रेल सदा साक्षी;
कई किलकारियों की ।
बच्चों के जन्म की,
नन्हीं सी मुस्कानों की ।
ये खुशियों की कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है ।

छुक छुक का संगीत हो,
या हो आवाज सीटी की ।
बच्चों की मासूम सी हंसी हो,
या हो लोरी अंताक्षरी की ।
ये जीवन के रागों की कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है ।

परिवारों के मिलन की,
त्योहारों की रौनक की ;
अपनी मिट्टी की मीठी सी खुशबू की।
अपनों से अपनों के मिलन की,
रिश्तों की एक प्यारी सी कहानी है
ये मेरी रेल की कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है।

मंगलमय और सुखमय यात्रा;
सुरक्षित एवं समयबद्धता के संग,
सतर्कता बजगता की जिम्मेदारी;
ये कर्त्तव्यपालन की कहानी है।
यह रेलसेवकों की कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है।

जन्म भूमि से कर्म भूमि तक;
सांसारिकता से आध्यात्मिकता तक,
आँखों के आँसुओं से चहरे की मुस्कान तक,
आवागमन की एक निराली सी कहानी है।
ये रेल यात्रा के किस्सों की कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है।

ये निरन्तर चलने की कहानी है।
ये संघर्षों में जीत की कहानी है
ये मेरी रेल की कहानी है।
ये मेरे देश की कहानी है।
ये मेरी रेल की कहानी है।
ये मेरे देश की कहानी है।

वरिष्ठ फार्मासिस्ट,
उत्तर पश्चिम रेलवे स्वास्थ्य ईकाई,
रींगस

उदासी

डॉ. राहुल मिश्र

तुम्हीं खुद से पूछो की क्या है उदासी;
ये ग़म, ये ख़ुशी, उलझने, दुःख का सागर;
नहीं कुछ भी इसमें हैं बातें जरा सी ॥1॥

जो नज़रें न फेरो, मेरे संग हो लो,
ख़ुशी को भी ढूँढो, ग़मों से भी खेलो;
जो गैरों को अपना बनाना ख़ुशी हो,
बुझते हुए झिलमिलाना ख़ुशी हो;
तो फिर दूर तक न दिखेगी उदासी ॥2॥

जो देखो तो सारी निगाहें झुकीं हैं,
कहीं शर्म बाकी, कहीं बेरुखी है;
सभी को सभी से मिलन में है उलझन,
जो सच बोले कोई तो रूकती है धड़कन;
ऐसे में सांसें भी लगती ख़ता सी ॥3॥

जो जीवन का मतलब है बनना बिगड़ना,
किसी का बिखरना, किसी का संवरना;
तो समझो कि तुमने कहाँ जीना सीखा,
जो कुछ तुमने सीखा सुबकना ही सीखा;
या सीखा है बस तुमने चालें सियासी ॥4॥

जरा आंसुओं को तरन्नुम में बदलो,
किसी की ख़ुशी के लिए ख़ुद को बदलो;
जमीं पर क़दम रख अथक चलना सीखो,
जो दूजे के ग़म में सिसकना भी सीखो;
तो चेहरा गलों सा खिले, हो फिजाँ सी ॥5॥

राज्य निदेशक
खादी और ग्रामोद्योग आयोग,
झालाना डूंगरी, जयपुर (राजस्थान) 302004

एक पिता के कलम से

देवानन्द पन्निका

तुम कब इतने बड़े हो गए, कुछ पता ही नही चला,
कल तक तुम्हारे पांव ज़मीन पर ठीक से टिकते न थे,
लड़खड़ाते थे, गिरते थे, फिर सम्हल जाते थे,
हर बार मेरे बाहों का सहारा हुआ करता था साथ मे ।
अब तुम्हारे पांव बड़े लम्बे से दिखते हैं, अब तुम्हारे पग आसमान तक जाते हैं।
कल मैं चलते चलते गिर गया, तुम्हे शर्मिंदगी हुई होगी,
तुम चाहते तो दे सकते थे सहारा बाहों का
मुझे तब न लगा था, जब मेरे जूते तुम्हारे पैरों में आते थे।
कल जब तू मुँह फेर के चला गया, मुझे लगा मेरा बेटा बड़ा हो गया
मुझे याद है तुम्हारी नन्ही नाजुक उंगलियां मेरे खुरदुरे चेहरे को छूती थीं,
चुभन से तुम्हे रोना आ जाता था, और मैं तुम्हारे सामने मुह बांध के बैठता था,
कल रास्ते मे एक कांटा पैरों से टकरा गया था, और फिर वही पनाह ले ली,
मेरे जूते भी तो बूढ़े हो चले है कैसे कहते, कहीं तुम्हे शर्मिंदा न होना पड़े।
कल एक बूढ़ा दरख्त रास्ते मे मुझे कहानी सुनाने लगा,
कहने लगा अब कोई मेरे पास नहीं बैठता, मैंने बरसो लोगो को छाया दी ।
अब ठूंठ बना हु तो कोई हाल पूछने भी नहीं आता
मुझे हंसी आ गई, कल तक मैं सोचता था बुढ़ापे का सहारा आ गया ।
अब लगता है, कोई है ही नहीं जो मेरी सुने, जो मुझसे बात करे,
मैं घण्टो तेरी तोतली जुबान सुना करता था, कुछ समझ में न आये तो भी,
आज साफ शब्दों में भी तुम्हे समझा नहीं पाता, मुझे तुम्हारे हाथ की जरूरत है, दवा की नहीं ।
मेरे लाल तू खूब बड़ा बन, लेकिन बरगद की तरह सबको छाया देना, खजूर की तरह नहीं ।।

*****

जिन्दगी

मैं अक्सर अब खुद को खुद की बातें सुना देता हूँ।
पता है अब मेरी तन्हाई पढ़ने वाला सिर्फ मैं हूँ।

स्याह रातों में जब आसमान सूना होता है,
कुछ चंद टिमटिमाते तारे उसकी तन्हाई बांटते दिखते हैं
ठीक उस वक़्त मेरा दिल हल्की धड़क के साथ,
सुनती है पत्तियों की सरसराहट, सन्नाटे को चीरती कुछ पतंगों की आवाज,
फिर घटती जाती है स्याह रात की परत,
और हल्की सी लालिमा लिए पूरब सुनहरा होता जाता है,

नदियों का संगीत, और परिंदो का कलरव एक मीठा रस घोलने लगता है,
और नज़र पड़ती है, ओस की सुनहरी बून्द पर।

जिसमें परवरदिगार ने सारे जहां की खूबसूरती भर दिया हो,
वो सूरज की लालिमा से लाल हो जाती है, कभी पत्ती के रंग से हरा, कभी सफेद

जब कि पता है चढ़ते सूरज के साथ उसे भी खुद को निछावर करना है,
ज़िन्दगी भी तो ऐसे ही गुज़रती है, जिसने सीखा वो खुदा बना, जो ढल गया सो ढल गया

भू वैज्ञानिक
जी.एस.आई, जयपुर

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

–सुभाषचन्द्र बोस

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।

–लाल बहादुर शास्त्री

नराकास बैठक का दृश्य

नराकास स्तर पर प्रकाशित हिंदी वार्षिक पत्रिका ''दर्पण'' को जारी करते हुए श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक, उ.प.रे.

उत्तर पश्चिम रेलवे
75 आज़ादी का अमृत महोत्सव
ज्वलनशील पदार्थों के साथ
यात्रा बहुत बड़ा खतरा
आप अपना ही नही बाकी
यात्रियों का जीवन भी संकट
में डाल रहे है।
विस्फोटक पदार्थों के साथ सफर घातक ही नही बल्कि गैर कानूनी भी है, इसके लिए आपकों रेल अधिनियम की
धारा 154, 164 एवं 165 के तहत 3 साल की सला या रू. 1000/– तक का जुर्माना या दोनो हो सकते है।
"सुरक्षित एंव तेज सम्पर्क,
उत्तर पश्चिम रेलवे का संकल्प"
www.nwr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक/फॉलो करें /NWRailways NWRailways_

उत्तर पश्चिम रेलवे
75 आज़ादी का अमृत महोत्सव
यह जानलेवा हो सकता है !
ट्रेन की छत/पायदान पर यात्रा
करना दण्डनीय अपराध है!
इससे बचे
"सुरक्षित एंव तेज सम्पर्क,
उत्तर पश्चिम रेलवे का संकल्प"
www.nwr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक/फॉलो करें /NWRailways NWRailways_